قرآن مجید

लफ़्ज़ी तरजुमा

لَا یُحِبُّ اللّٰہُ

पारा - 6

eParah

الجزء 6

لَا يُحِبُّ	اللّٰهُ	الْجَهْرَ	بِالسُّوْٓءِ	مِنَ الْقَوْلِ	اِلَّا	مَنْ	ظُلِمَ ؕ
नहीं पसंद करता	अल्लाह	आवाज़ बुलंद करना	साथ बुरी	बात के	मगर	जिस पर	ज़ुल्म किया गया हो

وَ كَانَ	اللّٰهُ	سَمِيْعًا	عَلِيْمًا ﴿148﴾	اِنْ	تُبْدُوْا	خَيْرًا	اَوْ	تُخْفُوْهُ
और है	अल्लाह	ख़ूब सुनने वाला	ख़ूब जानने वाला	अगर	तुम ज़ाहिर करो	कोई नेकी	या	तुम छुपाओ उसे

اَوْ	تَعْفُوْا	عَنْ سُوْٓءٍ	فَاِنَّ	اللّٰهَ	كَانَ	عَفُوًّا	قَدِيْرًا ﴿149﴾
या	तुम दरगुज़र करो	किसी बुराई से	तो बेशक	अल्लाह	है	बहुत माफ़ करने वाला	बहुत क़ुदरत रखने वाला

اِنَّ	الَّذِيْنَ	يَكْفُرُوْنَ	بِاللّٰهِ	وَ رُسُلِهٖ	وَ يُرِيْدُوْنَ	اَنْ	يُّفَرِّقُوْا
बेशक	वो जो	कुफ़्र करते हैं	साथ अल्लाह के	और उसके रसूलों के	और वो चाहते हैं	कि	वो तफ़रीक़ करें

بَيْنَ	اللّٰهِ	وَ رُسُلِهٖ	وَ يَقُوْلُوْنَ	نُؤْمِنُ	بِبَعْضٍ	وَّ نَكْفُرُ
दर्मियान	अल्लाह के	और उसके रसूलों के	और वो कहते हैं	हम ईमान लाते हैं	बाज़ पर	और हम कुफ़्र करते हैं

بِبَعْضٍ ۙ	وَّ يُرِيْدُوْنَ	اَنْ	يَّتَّخِذُوْا	بَيْنَ	ذٰلِكَ	سَبِيْلًا ﴿150﴾ ۙ	اُولٰٓئِكَ
बाज़ का	और वो चाहते हैं	कि	वो बना लें	दर्मियान	इसके	कोई रास्ता	यही लोग हैं

هُمُ	الْكٰفِرُوْنَ	حَقًّا ۚ	وَ اَعْتَدْنَا	لِلْكٰفِرِيْنَ	عَذَابًا	مُّهِيْنًا ﴿151﴾
वो	जो काफ़िर हैं	हक़ीक़ी	और तैयार कर रखा है हमने	काफ़िरों के लिए	अज़ाब	रुस्वा करने वाला

وَ الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	بِاللّٰهِ	وَ رُسُلِهٖ	وَ لَمْ	يُفَرِّقُوْا	بَيْنَ	اَحَدٍ
और वो जो	ईमान लाए	अल्लाह पर	और उसके रसूलों पर	और नहीं	उन्होंने तफ़रीक़ की	दर्मियान	किसी एक के

مِّنْهُمْ	اُولٰٓئِكَ	سَوْفَ	يُؤْتِيْهِمْ	اُجُوْرَهُمْ ؕ	وَ كَانَ	اللّٰهُ
उनमें से	यही लोग हैं	अनक़रीब	वो देगा उन्हें	अजर उनके	और है	अल्लाह

ع 21 11 1

غَفُوْرًا	رَّحِيْمًا ﴿152﴾ ع	يَسْـَٔلُكَ	اَهْلُ الْكِتٰبِ	اَنْ	تُنَزِّلَ	عَلَيْهِمْ
बहुत बख़्शने वाला	निहायत रहम करने वाला	सवाल करते हैं आपसे	अहले किताब	कि	आप उतार लाऐं	उन पर

كِتٰبًا	مِّنَ السَّمَآءِ	فَقَدْ	سَاَلُوْا	مُوْسٰٓى	اَكْبَرَ	مِنْ ذٰلِكَ
एक किताब	आसमान से	पस तहक़ीक़	उन्होंने सवाल किया था	मूसा से	ज़्यादा बड़ा	इससे

فَقَالُوْٓا	اَرِنَا	اللّٰهَ	جَهْرَةً	فَاَخَذَتْهُمُ	الصّٰعِقَةُ	بِظُلْمِهِمْ ۚ	ثُمَّ
पस उन्होंने कहा था	दिखा हमें	अल्लाह	सामने	तो पकड़ लिया उन्हें	बिजली की कड़क ने	बवजह उनके ज़ुल्म के	फिर

اتَّخَذُوا	الْعِجْلَ	مِنْۢ بَعْدِ	مَا	جَآءَتْهُمُ	الْبَيِّنٰتُ	فَعَفَوْنَا
उन्होंने बना लिया	बछड़े को (माबूद)	बाद उसके	जो	आ गईं उनके पास	वाज़ेह निशानियां	पस दरगुज़र किया हमने

عَنْ ذٰلِكَ ۚ	وَاٰتَيْنَا	مُوْسٰى	سُلْطٰنًا	مُّبِيْنًا ﴿153﴾	وَرَفَعْنَا	فَوْقَهُمُ
उससे	और दिया हमने	मूसा को	ग़लबा	वाज़ेह	और उठाया हमने	उन पर

الطُّوْرَ	بِمِيْثَاقِهِمْ	وَقُلْنَا	لَهُمُ	ادْخُلُوا	الْبَابَ	سُجَّدًا
तूर को	उनसे पुख़्ता अहद लेने के लिए	और कहा हमने	उन्हें	दाख़िल हो जाओ	दरवाज़े में	सज्दा करते हुए

وَّقُلْنَا	لَهُمْ	لَا تَعْدُوْا	فِي السَّبْتِ	وَاَخَذْنَا	مِنْهُمْ	مِّيْثَاقًا
और कहा हमने	उन्हें	ना तुम ज़्यादती करो	सब्त में	और लिया हमने	उनसे	अहद

غَلِيْظًا ﴿154﴾	فَبِمَا	نَقْضِهِمْ	مِّيْثَاقَهُمْ	وَكُفْرِهِمْ	بِاٰيٰتِ	اللّٰهِ
पक्का	पस बवजह	उनके तोड़ने के	अपने अहद को	और उनके कुफ़्र के	साथ आयात के	अल्लाह की

وَقَتْلِهِمُ	الْاَنْۢبِيَآءَ	بِغَيْرِ	حَقٍّ	وَّقَوْلِهِمْ	قُلُوْبُنَا	غُلْفٌ ؕ	بَلْ
और उनके क़त्ल करने के	अम्बिया को	बग़ैर	हक़ के	और उनके कहने के	दिल हमारे	ग़िलाफ़ हैं	बल्कि

طَبَعَ	اللّٰهُ	عَلَيْهَا	بِكُفْرِهِمْ	فَلَا	يُؤْمِنُوْنَ	اِلَّا	قَلِيْلًا ﴿155﴾ ص
मोहर लगा दी	अल्लाह ने	उन पर	बवजह उनके कुफ़्र के	पस नहीं	वो ईमान लाते	मगर	बहुत थोड़ा

وَّبِكُفْرِهِمْ	وَقَوْلِهِمْ	عَلٰى	مَرْيَمَ	بُهْتَانًا	عَظِيْمًا ﴿156﴾ لا
और बवजह उनके कुफ़्र के	और उनके कहने(बांधने) के	ऊपर	मरियम के	बोहतान	बहुत बड़ा

وَّقَوْلِهِمْ	اِنَّا	قَتَلْنَا	الْمَسِيْحَ	عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ	رَسُوْلَ	اللّٰهِ ۚ
और उनके कहने के	बेशक हम	क़त्ल किया हमने	मसीह	ईसा इबने मरियम को	जो रसूल था	अल्लाह का

وَمَا	قَتَلُوْهُ	وَمَا	صَلَبُوْهُ	وَلٰكِنْ	شُبِّهَ	لَهُمْ ؕ
हालांकि नहीं	उन्होंने क़त्ल किया उसे	और नहीं	उन्होंने सलीब/सूली चढ़ाया उसे	और लेकिन	मुश्तबा कर दिया गया	उनके लिए

وَاِنَّ	الَّذِيْنَ	اخْتَلَفُوْا	فِيْهِ	لَفِيْ شَكٍّ	مِّنْهُ ؕ	مَا	لَهُمْ
और बेशक	वो जिन्होंने	इख़्तिलाफ़ किया	इसमें	अलबत्ता शक में हैं	इससे	नहीं	उनके लिए

بِهٖ	مِنْ عِلْمٍ	اِلَّا	اتِّبَاعَ	الظَّنِّ ۚ	وَمَا	قَتَلُوْهُ	يَقِيْنًا ۙ (157)
इसका	कोई इल्म	मगर	पैरवी करना	गुमान की	और नहीं	उन्होंने क़त्ल किया उसे	यक़ीनी तौर पर

بَلْ	رَّفَعَهُ	اللّٰهُ	اِلَيْهِ ؕ	وَكَانَ	اللّٰهُ	عَزِيْزًا	حَكِيْمًا (158)	وَاِنْ
बल्कि	उठा लिया उसे	अल्लाह ने	अपनी तरफ़	और है	अल्लाह	बहुत ज़बरदस्त	ख़ूब हिक्मत वाला	और नहीं

مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ	اِلَّا	لَيُؤْمِنَنَّ	بِهٖ	قَبْلَ	مَوْتِهٖ ۚ	وَيَوْمَ
अहले किताब में से कोई	मगर	अलबत्ता वो ज़रूर ईमान लाएगा	इस पर	पहले	उसकी मौत से	और दिन

الْقِيٰمَةِ	يَكُوْنُ	عَلَيْهِمْ	شَهِيْدًا ۚ (159)	فَبِظُلْمٍ	مِّنَ الَّذِيْنَ	هَادُوْا
क़यामत के	वो होगा	उन पर	गवाह	पस बवजह ज़ुल्म के	उन लोगों के जो	यहूदी बन गए

حَرَّمْنَا	عَلَيْهِمْ	طَيِّبٰتٍ	اُحِلَّتْ	لَهُمْ	وَبِصَدِّهِمْ	عَنْ سَبِيْلِ
हराम कर दीं हमने	उन पर	पाकीज़ा चीज़ें	जो हलाल की गई थीं	उनके लिए	और बवजह उनके रोकने के	रास्ते से

اللّٰهِ	كَثِيْرًا ۙ (160)	وَّاَخْذِهِمُ	الرِّبٰوا	وَقَدْ	نُهُوْا	عَنْهُ
अल्लाह के	अक्सरियत को	और(बवजह) उनके लेने के	सूद को	हालांकि तहक़ीक़	वो रोके गए थे	उस से

وَاَكْلِهِمْ	اَمْوَالَ	النَّاسِ	بِالْبَاطِلِ ؕ	وَاَعْتَدْنَا	لِلْكٰفِرِيْنَ
और (बवजह) उनके खाने के	माल	लोगों के	बातिल(तरीक़े) से	और तैयार कर रखा है हमने	काफ़िरों के लिए

مِنْهُمْ	عَذَابًا	اَلِيْمًا ﴿161﴾	لٰكِنِ	الرّٰسِخُوْنَ	فِي الْعِلْمِ	مِنْهُمْ
उनमें से	अज़ाब	दर्दनाक	लेकिन	जो रासिख़ हैं	इल्म में	उनमें से

وَالْمُؤْمِنُوْنَ	يُؤْمِنُوْنَ	بِمَآ	اُنْزِلَ	اِلَيْكَ	وَمَآ	اُنْزِلَ
और जो ईमान लाने वाले हैं	वो ईमान लाते हैं	उस पर जो	नाज़िल किया गया	तरफ़ आपके	और जो	नाज़िल किया गया

مِنْ قَبْلِكَ	وَالْمُقِيْمِيْنَ	الصَّلٰوةَ	وَالْمُؤْتُوْنَ	الزَّكٰوةَ	وَالْمُؤْمِنُوْنَ
आपसे पहले	और जो क़ायम करने वाले हैं	नमाज़	और जो देने वाले हैं	ज़कात	और जो ईमान लाने वाले हैं

ع 22 10 2

بِاللّٰهِ	وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ	اُولٰٓئِكَ	سَنُؤْتِيْهِمْ	اَجْرًا	عَظِيْمًا ﴿162﴾ ع	اِنَّآ
अल्लाह पर	और आख़िरी दिन पर	यही लोग हैं	अनक़रीब हम देंगे उन्हें	अज्र	बहुत बड़ा	बेशक हम

اَوْحَيْنَآ	اِلَيْكَ	كَمَآ	اَوْحَيْنَآ	اِلٰى	نُوْحٍ	وَّالنَّبِيّٖنَ	مِنْۢ بَعْدِهٖ ۚ
वही की हमने	तरफ़ आपके	जैसा कि	वही की हमने	तरफ़	नूह के	और नबियों के	बाद इसके

وَاَوْحَيْنَآ	اِلٰٓى	اِبْرٰهِيْمَ	وَاِسْمٰعِيْلَ	وَاِسْحٰقَ	وَيَعْقُوْبَ
और वही की हमने	तरफ़	इब्राहीम	और इस्माईल	और इसहाक़	और याक़ूब

وَالْاَسْبَاطِ	وَعِيْسٰى	وَاَيُّوْبَ	وَيُوْنُسَ	وَهٰرُوْنَ	وَسُلَيْمٰنَ ۚ
और औलादे याक़ूब के	और ईसा	और अय्यूब	और यूनुस	और हारून	और सुलेमान के

وَاٰتَيْنَا	دَاوٗدَ	زَبُوْرًا ﴿163﴾ ۚ	وَرُسُلًا	قَدْ	قَصَصْنٰهُمْ	عَلَيْكَ
और दी हमने	दाऊद को	ज़बूर	और कई रसूल	तहक़ीक़	ज़िक्र किया हमने उनका	आप पर

مِنْ قَبْلُ	وَرُسُلًا	لَّمْ	نَقْصُصْهُمْ	عَلَيْكَ ؕ	وَكَلَّمَ	اللّٰهُ	مُوْسٰى
इससे पहले	और कई रसूल	नहीं	हमने ज़िक्र किया उनका	आप पर	और कलाम किया	अल्लाह ने	मूसा से

تَكْلِيْمًا ﴿164﴾ ۚ	رُسُلًا	مُّبَشِّرِيْنَ	وَمُنْذِرِيْنَ	لِئَلَّا	يَكُوْنَ	لِلنَّاسِ
कलाम करना	(ये) रसूल थे	ख़ुशख़बरी देने वाले	और डराने वाले	ताकि ना	हो	लोगों के लिए

عَلَى اللّٰهِ	حُجَّةٌۢ	بَعْدَ	الرُّسُلِ ؕ	وَ كَانَ	اللّٰهُ	عَزِيْزًا	حَكِيْمًا ﴿165﴾
अल्लाह पर	कोई हुज्जत	बाद	रसूलों के	और है	अल्लाह	बहुत ज़बरदस्त	ख़ूब हिक्मत वाला

لٰكِنِ	اللّٰهُ	يَشْهَدُ	بِمَآ	اَنْزَلَ	اِلَيْكَ	اَنْزَلَهٗ	بِعِلْمِهٖ ۚ
लेकिन	अल्लाह	वो गवाही देता है	उसकी जो	उसने नाज़िल किया	तरफ़ आपके	उसने नाज़िल किया है उसे	अपने इल्म से

وَالْمَلٰٓئِكَةُ	يَشْهَدُوْنَ ؕ	وَ كَفٰى	بِاللّٰهِ	شَهِيْدًا ؕ ﴿166﴾	اِنَّ	الَّذِيْنَ
और फ़रिश्ते	वो गवाही देते हैं	और काफ़ी है	अल्लाह	गवाह	बेशक	वो जिन्होंने

كَفَرُوْا	وَ صَدُّوْا	عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ	قَدْ	ضَلُّوْا	ضَلٰلًۢا	بَعِيْدًا ﴿167﴾
कुफ़्र किया	और उन्होंने रोका	अल्लाह के रास्ते से	तहक़ीक़	वो गुमराह हो गए	गुमराह होना	दूर का

اِنَّ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	وَ ظَلَمُوْا	لَمْ	يَكُنِ	اللّٰهُ	لِيَغْفِرَ	لَهُمْ	وَ لَا
बेशक	वो जिन्होंने	कुफ़्र किया	और ज़ुल्म किया	नहीं	है	अल्लाह	कि वो बख़्श दे	उन्हें	और ना

لِيَهْدِيَهُمْ	طَرِيْقًا ﴿168﴾ ۙ	اِلَّا	طَرِيْقَ	جَهَنَّمَ	خٰلِدِيْنَ	فِيْهَآ
कि वो हिदायत दे उन्हें	रास्ते की	सिवाय	रास्ते के	जहन्नम के	हमेशा रहने वाले हैं	उसमें

اَبَدًا ؕ	وَ كَانَ	ذٰلِكَ	عَلَى اللّٰهِ	يَسِيْرًا ﴿169﴾	يٰٓاَيُّهَا	النَّاسُ	قَدْ
अबद तक/ हमेशा-हमेशा	और है	ये बात	अल्लाह पर	बहुत आसान	ऐ	लोगो	तहक़ीक़

جَآءَكُمُ	الرَّسُوْلُ	بِالْحَقِّ	مِنْ رَّبِّكُمْ	فَاٰمِنُوْا	خَيْرًا	لَّكُمْ ؕ
आ गया है तुम्हारे पास	रसूल	साथ हक़ के	तुम्हारे रब की तरफ़ से	पस ईमान ले आओ	बेहतर है	तुम्हारे लिए

وَ اِنْ	تَكْفُرُوْا	فَاِنَّ	لِلّٰهِ	مَا	فِى السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضِ ؕ
और अगर	तुम कुफ़्र करोगे	तो बेशक	अल्लाह ही के लिए है	जो कुछ	आसमानों में है	और ज़मीन में

وَ كَانَ	اللّٰهُ	عَلِيْمًا	حَكِيْمًا ﴿170﴾	يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ	لَا تَغْلُوْا
और है	अल्लाह	बहुत इल्म वाला	बहुत हिक्मत वाला	ऐ अहले किताब	ना तुम ग़ुलुव करो

فِيْ دِيْنِكُمْ	وَلَا	تَقُوْلُوْا	عَلَى اللّٰهِ	اِلَّا	الْحَقَّ ؕ	اِنَّمَا	الْمَسِيْحُ
अपने दीन में	और ना	तुम कहो	अल्लाह पर	मगर	हक़	बेशक	मसीह

عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ	رَسُوْلُ	اللّٰهِ	وَكَلِمَتُهٗ ۚ	اَلْقٰىهَآ	اِلٰى
ईसा इबने मरयम	रसूल है	अल्लाह के	और कलमा उसका	उसने डाला था उसको	तरफ़

مَرْيَمَ	وَرُوْحٌ	مِّنْهُ ز	فَاٰمِنُوْا	بِاللّٰهِ	وَرُسُلِهٖ ۚ	وَلَا	تَقُوْلُوْا
मरियम के	और रूह	उसकी तरफ़ से	तो ईमान लाओ तुम	अल्लाह पर	और उसके रसूलों पर	और ना	तुम कहो

ثَلٰثَةٌ ؕ	اِنْتَهُوْا	خَيْرًا	لَّكُمْ ؕ	اِنَّمَا	اللّٰهُ	اِلٰهٌ	وَّاحِدٌ ؕ
तीन हैं	बाज़ आ जाओ	बेहतर है	तुम्हारे लिए	बेशक	अल्लाह	इलाह है	एक ही

سُبْحٰنَهٗٓ	اَنْ	يَّكُوْنَ	لَهٗ	وَلَدٌ ۘ	لَهٗ	مَا	فِي السَّمٰوٰتِ
पाक है वो	कि	हो	उसके लिए	कोई औलाद	उसी के लिए है	जो कुछ	आसमानों में है

وقف لازم

وَمَا	فِي الْاَرْضِ ؕ	وَكَفٰى	بِاللّٰهِ	وَكِيْلًا ﴿171﴾ ع	لَنْ	يَّسْتَنْكِفَ	
और जो कुछ	ज़मीन में है	और काफ़ी है	अल्लाह	कारसाज़	हरगिज़ नहीं	आर महसूस करेगा	

ع 23 9 3

الْمَسِيْحُ	اَنْ	يَّكُوْنَ	عَبْدًا	لِّلّٰهِ	وَلَا	الْمَلٰٓئِكَةُ	الْمُقَرَّبُوْنَ ؕ
मसीह	कि	हो वो	बन्दा	अल्लाह का	और ना	फ़रिश्ते	मुक़र्रब

وَمَنْ	يَّسْتَنْكِفْ	عَنْ عِبَادَتِهٖ	وَيَسْتَكْبِرْ	فَسَيَحْشُرُهُمْ	اِلَيْهِ
और जो कोई	आर महसूस करे	उसकी इबादत से	और तकब्बुर करे	पस अनक़रीब वो इकट्ठा करेगा उन्हें	अपनी तरफ़

جَمِيْعًا ﴿172﴾	فَاَمَّا	الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	وَعَمِلُوا	الصّٰلِحٰتِ
सब के सबको	तो रहे	वो जो	ईमान लाए	और उन्होंने अमल किए	नेक

فَيُوَفِّيْهِمْ	اُجُوْرَهُمْ	وَيَزِيْدُهُمْ	مِّنْ فَضْلِهٖ ۚ	وَاَمَّا
पस वो पूरे-पूरे देगा उन्हें	अजर उनके	और वह ज़्यादा देगा उन्हें	अपने फ़ज़्ल से	और रहे

الَّذِيْنَ	اسْتَنْكَفُوْا	وَاسْتَكْبَرُوْا	فَيُعَذِّبُهُمْ	عَذَابًا	اَلِيْمًا ۙ
वो जिन्होंने	आर महसूस की	और उन्होंने तकब्बुर किया	तो वो अज़ाब देगा उन्हें	अज़ाब	दर्दनाक

وَّلَا	يَجِدُوْنَ	لَهُمْ	مِّنْ دُوْنِ	اللّٰهِ	وَلِيًّا	وَّلَا	نَصِيْرًا ﴿173﴾
और नहीं	वो पाऐंगे	अपने लिए	सिवाए	अल्लाह के	कोई हिमायती	और ना	कोई मददगार

يٰٓاَيُّهَا	النَّاسُ	قَدْ	جَآءَكُمْ	بُرْهَانٌ	مِّنْ رَّبِّكُمْ	وَ اَنْزَلْنَآ
ऐ	लोगो	तहक़ीक़	आ चुकी तुम्हारे पास	एक दलील	तुम्हारे रब की तरफ़ से	और नाज़िल किया हमने

اِلَيْكُمْ	نُوْرًا	مُّبِيْنًا ﴿174﴾	فَاَمَّا	الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	بِاللّٰهِ
तरफ़ तुम्हारे	एक नूर	वाज़ेह	तो रहे	वो जो	ईमान लाए	अल्लाह पर

وَاعْتَصَمُوْا	بِهٖ	فَسَيُدْخِلُهُمْ	فِيْ رَحْمَةٍ	مِّنْهُ	وَفَضْلٍ ۙ
और उन्होंने मज़बूत पकड़ा	उसे	तो अनक़रीब वो दाख़िल करेगा उन्हें	रहमत में	अपनी तरफ़ से	और फ़ज़्ल में

وَّيَهْدِيْهِمْ	اِلَيْهِ	صِرَاطًا	مُّسْتَقِيْمًا ﴿175﴾ ؕ	يَسْتَفْتُوْنَكَ ؕ	قُلِ
और रहनुमाई करेगा उनकी	अपनी तरफ़	रास्ते	सीधे की	वो फ़तवा पूछते हैं आपसे	कह दीजिए

اللّٰهُ	يُفْتِيْكُمْ	فِي الْكَلٰلَةِ ؕ	اِنِ	امْرُؤٌا	هَلَكَ	لَيْسَ	لَهٗ
अल्लाह	वो फ़तवा देता है तुम्हें	कलाला के बारे में	अगर	कोई मर्द	हलाक हो जाए	ना हो	उसकी

وَلَدٌ	وَّلَهٗٓ	اُخْتٌ	فَلَهَا	نِصْفُ	مَا	تَرَكَ ۚ	وَهُوَ
कोई औलाद	और हो उसकी	एक बहन	तो उसके लिए	आधा है	उसका जो	उसने छोड़ा	और वो ख़ुद

يَرِثُهَآ	اِنْ	لَّمْ	يَكُنْ	لَّهَا	وَلَدٌ ؕ	فَاِنْ	كَانَتَا	اثْنَتَيْنِ
वारिस होगा उसका	अगर	ना	हो	उस(बहन) की	कोई औलाद	फिर अगर	हों वो दोनों	दो बहनें

فَلَهُمَا	الثُّلُثٰنِ	مِمَّا	تَرَكَ ؕ	وَاِنْ	كَانُوْٓا	اِخْوَةً
तो उन दोनों के लिए	दो तिहाई है	उसमें से जो	उस (भाई) ने छोड़ा	और अगर	हों वो	कई बहन भाई

يُبَيِّنُ	الْاُنْثَيَيْنِ ۚ	حَظِّ	مِثْلُ	فَلِلذَّكَرِ	وَّنِسَآءً	رِّجَالًا
वाज़ेह करता है	दो औरतों के है	हिस्सा	मानिंद	तो मर्द के लिए	और औरतें	मर्द

عَلِيْمٌ (176) ع	شَيْءٍ	بِكُلِّ	وَاللّٰهُ	تَضِلُّوْا ۚ	اَنْ	لَكُمْ	اللّٰهُ
ख़ूब जानने वाला है	चीज़ को	हर	और अल्लाह	(ना) तुम गुमराह हो जाओ	ताकि	तुम्हारे लिए	अल्लाह

ع 24 5 4

رُكُوْعَاتُهَا: 16 — 5 سُوْرَةُ الْمَآئِدَةِ مَدَنِيَّةٌ 112 — اٰيَاتُهَا: 120

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

منزل 2

لَكُمْ	اُحِلَّتْ	بِالْعُقُوْدِ ۗ	اَوْفُوْا	اٰمَنُوْٓا	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ
तुम्हारे लिए	हलाल कर दिए गए	अहदो पैमान को	पूरा करो	ईमान लाए हो	ऐ लोगो जो

مُحِلِّي	غَيْرَ	عَلَيْكُمْ	يُتْلٰى	مَا	اِلَّا	الْاَنْعَامِ	بَهِيْمَةُ
हलाल करने वाले हो	ना	तुम पर	पढ़े जाएंगे	उनके जो	सिवाय	मवेशियों के	चौपाए

يُرِيْدُ (1)	مَا	يَحْكُمُ	اللّٰهَ	اِنَّ	حُرُمٌ ۗ	وَاَنْتُمْ	الصَّيْدِ
वो चाहता है	जो	वो फ़ैसला करता है	अल्लाह	बेशक	(हालत) एहराम में हो	जबकि तुम	शिकार को

الْحَرَامَ	الشَّهْرَ	وَلَا	اللّٰهِ	شَعَآئِرَ	لَا تُحِلُّوْا	اٰمَنُوْا	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ
हराम को	माहे	और ना	अल्लाह की	निशानियों को	ना तुम हलाल करो	ईमान लाए हो	ऐ लोगो जो

الْبَيْتَ الْحَرَامَ	آٰمِّيْنَ	وَلَآ	الْقَلَآئِدَ	وَلَا	الْهَدْيَ	وَلَا
बैतुल हराम का	इरादा करने वालों को	और ना	पट्टे वाले जानवरों को	और ना	क़ुर्बानी के जानवर को	और ना

فَاصْطَادُوْا ۚ	حَلَلْتُمْ	وَاِذَا	وَرِضْوَانًا ۚ	مِّنْ رَّبِّهِمْ	فَضْلًا	يَبْتَغُوْنَ
तो शिकार करो (अगर तुम चाहो)	हलाल हो जाओ तुम	और जब	और रज़ामंदी	अपने रब की तरफ़ से	फ़ज़्ल	जो चाहते हैं

عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ	صَدُّوْكُمْ	اَنْ	قَوْمٍ	شَنَاٰنُ	يَجْرِمَنَّكُمْ	وَلَا
मस्जिदे हराम से	उन्होंने रोका तुम्हें	कि	किसी क़ौम की	दुश्मनी	आमादा करे तुम्हें	और ना

وقف لازم

اَنْ	تَعْتَدُوْا ۘ	وَتَعَاوَنُوْا	عَلَى الْبِرِّ	وَالتَّقْوٰى ۖ	وَلَا	تَعَاوَنُوْا	عَلَى الْاِثْمِ
कि	तुम ज़्यादती करो	और तआवुन करो	नेकी पर	और तक़्वा पर	और ना	तुम तआवुन करो	गुनाह पर

الربع

وَالْعُدْوَانِ ۖ	وَاتَّقُوا	اللّٰهَ ؕ	اِنَّ	اللّٰهَ	شَدِيْدُ	الْعِقَابِ ②	حُرِّمَتْ
और ज़्यादती पर	और डरो	अल्लाह से	बेशक	अल्लाह	सख़्त	सज़ा वाला है	हराम किया गया

عَلَيْكُمُ	الْمَيْتَةُ	وَالدَّمُ	وَلَحْمُ	الْخِنْزِيْرِ	وَمَآ	اُهِلَّ	لِغَيْرِ	اللّٰهِ
तुम पर	मुर्दार	और ख़ून	और गोश्त	ख़िंज़ीर का	और जो	पुकारा गया	वास्ते ग़ैर	अल्लाह के

بِهٖ	وَالْمُنْخَنِقَةُ	وَالْمَوْقُوْذَةُ	وَالْمُتَرَدِّيَةُ	وَالنَّطِيْحَةُ	وَمَآ
उसको	और गला घुट कर मरने वाली	और चोट लग कर मरने वाली	और बुलंदी से गिर कर मरने वाली	और सींग लग कर मरने वाली	और जिसे

اَكَلَ	السَّبُعُ	اِلَّا	مَا	ذَكَّيْتُمْ قف	وَمَا	ذُبِحَ	عَلَى النُّصُبِ	وَاَنْ
खा जाए	दरिंदा	मगर	जिसको	ज़िबह कर लिया तुमने	और जो	ज़िबह किया गया	आस्तानों पर	और ये कि

تَسْتَقْسِمُوْا	بِالْاَزْلَامِ ؕ	ذٰلِكُمْ	فِسْقٌ ؕ	اَلْيَوْمَ	يَئِسَ	الَّذِيْنَ
तुम क़िस्मत मालूम करो	तीरों/पांसों के ज़रिए	यह सब	गुनाह (के काम) हैं	आज के दिन	मायूस हो गए	वो जिन्होंने

كَفَرُوْا	مِنْ دِيْنِكُمْ	فَلَا	تَخْشَوْهُمْ	وَاخْشَوْنِ ؕ	اَلْيَوْمَ	اَكْمَلْتُ
कुफ़्र किया	तुम्हारे दीन से	तो ना	तुम डरो उनसे	और डरो मुझसे	आज के दिन	मुकम्मल कर दिया मैंने

لَكُمْ	دِيْنَكُمْ	وَاَتْمَمْتُ	عَلَيْكُمْ	نِعْمَتِيْ	وَرَضِيْتُ	لَكُمُ
तुम्हारे लिए	दीन तुम्हारा	और तमाम कर दी मैंने	तुम पर	नेअमत अपनी	और पसंद कर लिया मैंने	तुम्हारे लिए

الْاِسْلَامَ	دِيْنًا ؕ	فَمَنِ	اضْطُرَّ	فِيْ مَخْمَصَةٍ	غَيْرَ مُتَجَانِفٍ	لِّاِثْمٍ ۙ
इस्लाम को	बतौर दीन	तो जो कोई	मजबूर किया गया	भूख में	ना माइल होने वाला	तरफ़ गुनाह के

فَاِنَّ	اللّٰهَ	غَفُوْرٌ	رَّحِيْمٌ ③	يَسْـَٔلُوْنَكَ	مَاذَآ	اُحِلَّ	لَهُمْ ؕ
तो बेशक	अल्लाह	बहुत बख़्शने वाला है	निहायत रहम करने वाला है	वो सवाल करते हैं आपसे	क्या कुछ	हलाल किया गया	उनके लिए

قُلْ	اُحِلَّ	لَكُمُ	الطَّيِّبٰتُ ۙ	وَمَا	عَلَّمْتُمْ	مِّنَ الْجَوَارِحِ
कह दीजिए	हलाल की गईं	तुम्हारे लिए	पाकीज़ा चीज़ें	और जो	सिखाया तुमने	शिकारी जानवरों को

مُكَلِّبِيْنَ	تُعَلِّمُوْنَهُنَّ	مِمَّا	عَلَّمَكُمُ	اللّٰهُ ۫	فَكُلُوْا	مِمَّآ
शिकार की तालीम देने वाले	तुम सिखाते हो उन्हें	उसमें से जो	सिखाया तुम्हें	अल्लाह ने	तो खाओ	उसमें से जो

اَمْسَكْنَ	عَلَيْكُمْ	وَاذْكُرُوا	اسْمَ	اللّٰهِ	عَلَيْهِ ۠	وَاتَّقُوا	اللّٰهَ ؕ	اِنَّ
वो रोक रखें	तुम पर	और ज़िक्र करो	नाम	अल्लाह का	उस पर	और डरो	अल्लाह से	बेशक

اللّٰهَ	سَرِيْعُ	الْحِسَابِ ④	اَلْيَوْمَ	اُحِلَّ	لَكُمُ	الطَّيِّبٰتُ ؕ	
अल्लाह	जल्द लेने वाला है	हिसाब	आज के दिन	हलाल कर दी गईं	तुम्हारे लिए	पाकीज़ा चीज़ें	

وَطَعَامُ	الَّذِيْنَ	اُوْتُوا	الْكِتٰبَ	حِلٌّ	لَّكُمْ ۠	وَطَعَامُكُمْ	حِلٌّ
और खाना	उनका जो	दिए गए	किताब	हलाल है	तुम्हारे लिए	और खाना तुम्हारा	हलाल है

لَّهُمْ ۫	وَالْمُحْصَنٰتُ	مِنَ الْمُؤْمِنٰتِ	وَالْمُحْصَنٰتُ	مِنَ الَّذِيْنَ	اُوْتُوا
उनके लिए	और पाक दामन औरतें	मोमिन औरतों में से	और पाक दामन औरतें	उनमें से जो	दिए गए

الْكِتٰبَ	مِنْ قَبْلِكُمْ	اِذَآ	اٰتَيْتُمُوْهُنَّ	اُجُوْرَهُنَّ	مُحْصِنِيْنَ
किताब	तुमसे पहले	जब	दे दो तुम उन्हें	महर उनके	निकाह में लाने वाले

غَيْرَ مُسٰفِحِيْنَ	وَلَا	مُتَّخِذِيْٓ	اَخْدَانٍ ؕ	وَمَنْ	يَّكْفُرْ	بِالْاِيْمَانِ
ना बदकारी करने वाले	और ना	बनाने वाले	छुपे दोस्त	और जो कोई	कुफ़्र करेगा	साथ ईमान के

فَقَدْ	حَبِطَ	عَمَلُهٗ ۫	وَهُوَ	فِي الْاٰخِرَةِ	مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ⑤ ع
पस तहक़ीक़	ज़ाया हो गया	अमल उसका	और वो	आख़िरत में	ख़सारा पाने वालों में से होगा

ع 1 5 5

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْٓا	اِذَا	قُمْتُمْ	اِلَى الصَّلٰوةِ	فَاغْسِلُوْا
ऐ लोगो जो	ईमान लाए हो	जब	खड़े हो तुम	तरफ़ नमाज़ के	तो धो लो तुम

وُجُوْهَكُمْ	وَ اَيْدِيَكُمْ	اِلَى الْمَرَافِقِ	وَامْسَحُوْا	بِرُءُوْسِكُمْ
अपने चेहरों को	और अपने हाथों को	कोहनियों तक	और मसह कर लो	अपने सरों का

وَ اَرْجُلَكُمْ	اِلَى الْكَعْبَيْنِ ؕ	وَ اِنْ	كُنْتُمْ	جُنُبًا	فَاطَّهَّرُوْا ؕ	وَ اِنْ
और अपने पांव को (धो लो)	टख़नों तक	और अगर	हो तुम	हालते जनाबत में	तो ख़ूब पाक हो जाओ	और अगर

كُنْتُمْ	مَّرْضٰۤى	اَوْ	عَلٰى سَفَرٍ	اَوْ	جَآءَ	اَحَدٌ	مِّنْكُمْ	مِّنَ الْغَآئِطِ
हो तुम	बीमार	या	किसी सफ़र पर	या	आया	कोई एक	तुम में से	क़ज़ाए हाजत से

اَوْ	لٰمَسْتُمُ	النِّسَآءَ	فَلَمْ	تَجِدُوْا	مَآءً	فَتَيَمَّمُوْا	صَعِيْدًا
या	छुआ हो तुमने	औरतों को	फिर ना	तुम पाओ	पानी	तो तयम्मुम कर लो	मिट्टी

طَيِّبًا	فَامْسَحُوْا	بِوُجُوْهِكُمْ	وَ اَيْدِيْكُمْ	مِّنْهُ ؕ	مَا	يُرِيْدُ	اللّٰهُ
पाक से	फिर मसह करो	अपने चेहरों का	और अपने हाथों का	उससे	नहीं	चाहता	अल्लाह

لِيَجْعَلَ	عَلَيْكُمْ	مِّنْ حَرَجٍ	وَّلٰكِنْ	يُّرِيْدُ	لِيُطَهِّرَكُمْ	وَ لِيُتِمَّ
कि वो कर दे	तुम पर	कोई तंगी	और लेकिन	वो चाहता है	कि वो पाक कर दे तुम्हें	और ताकि वो पूरा कर दे

نِعْمَتَهٗ	عَلَيْكُمْ	لَعَلَّكُمْ	تَشْكُرُوْنَ ⑥	وَاذْكُرُوْا	نِعْمَةَ	اللّٰهِ
अपनी नेअमत को	तुम पर	ताकि तुम	शुक्र अदा करो	और याद करो	नेअमत को	अल्लाह की

عَلَيْكُمْ	وَ مِيْثَاقَهُ	الَّذِىْ	وَاثَقَكُمْ	بِهٖۤ	اِذْ	قُلْتُمْ	سَمِعْنَا
जो तुम पर है	और उसका पुख़्ता अहद	वो जो	उसने तुमसे अहद लिया	साथ उसके	जब	कहा तुमने	सुना हमने

وَ اَطَعْنَا ۫	وَاتَّقُوا	اللّٰهَ ؕ	اِنَّ	اللّٰهَ	عَلِيْمٌۢ	بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ⑦
और इताअत की हमने	और डरो	अल्लाह से	बेशक	अल्लाह	ख़ूब जानने वाला है	सीनों वाले(भेद)

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	كُوْنُوْا	قَوّٰمِيْنَ	لِلّٰهِ	شُهَدَآءَ	بِالْقِسْطِ ۫
ऐ लोगो जो	ईमान लाए हो	हो जाओ तुम	क़ायम रहने वाले	अल्लाह के लिए	गवाह	साथ इंसाफ़ के

وَلَا	يَجْرِمَنَّكُمْ	شَنَاٰنُ	قَوْمٍ	عَلٰٓى	اَلَّا	تَعْدِلُوْا ؕ	اِعْدِلُوْا قف
और ना	हरगिज़ आमादा करे तुम्हे	दुश्मनी	किसी क़ौम की	इस पर	कि ना	तुम अदल करोगे	अदल करो

هُوَ	اَقْرَبُ	لِلتَّقْوٰى ز	وَاتَّقُوا	اللّٰهَ ؕ	اِنَّ	اللّٰهَ	خَبِيْرٌۢ
वो	ज़्यादा क़रीब है	तक़वा के	और डरो	अल्लाह से	बेशक	अल्लाह	ख़ूब ख़बर रखने वाला है

بِمَا	تَعْمَلُوْنَ ⑧	وَعَدَ	اللّٰهُ	الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	وَعَمِلُوا	الصّٰلِحٰتِ لا
उसकी जो	तुम अमल करते हो	वादा किया	अल्लाह ने	उनसे जो	ईमान लाए	और उन्होंने अमल किए	नेक

لَهُمْ	مَّغْفِرَةٌ	وَّاَجْرٌ	عَظِيْمٌ ⑨	وَالَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	وَكَذَّبُوْا	
उनके लिए	मग़फ़िरत	और अज्र है	बहुत बड़ा	और वो जिन्होंने	कुफ़्र किया	और उन्होंने झुठलाया	

بِاٰيٰتِنَآ	اُولٰٓئِكَ	اَصْحٰبُ	الْجَحِيْمِ ⑩	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ	اٰمَنُوا	اذْكُرُوْا
हमारी आयात को	यही लोग हैं	साथी	जहन्नम के	ऐ लोगो जो	ईमान लाऐ हो	याद करो

نِعْمَتَ	اللّٰهِ	عَلَيْكُمْ	اِذْ	هَمَّ	قَوْمٌ	اَنْ	يَّبْسُطُوْٓا	اِلَيْكُمْ
नेअमत को	अल्लाह की	जो तुम पर है	जब	इरादा किया	एक क़ौम ने	कि	वो बढ़ाऐं	तरफ़ तुम्हारे

اَيْدِيَهُمْ	فَكَفَّ	اَيْدِيَهُمْ	عَنْكُمْ ج	وَاتَّقُوا	اللّٰهَ ؕ	وَعَلَى اللّٰهِ
हाथ अपने	तो उसने रोक दिए	हाथ उनके	तुमसे	और डरो	अल्लाह से	और अल्लाह ही पर

فَلْيَتَوَكَّلِ	الْمُؤْمِنُوْنَ ⑪ ع	وَلَقَدْ	اَخَذَ	اللّٰهُ	مِيْثَاقَ
पस चाहिए कि तवक्कल करें	ईमान वाले	और अलबत्ता तहक़ीक़	लिया	अल्लाह ने	पुख़्ता अहद

ع 2 6 6

بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ج	وَبَعَثْنَا	مِنْهُمُ	اثْنَيْ عَشَرَ	نَقِيْبًا ؕ	وَقَالَ	اللّٰهُ
बनी इस्राईल से	और मुक़र्रर किए हमने	उनमें से	बारह	निगरान	और कहा	अल्लाह ने

اِنِّيْ	مَعَكُمْ ؕ	لَئِنْ	اَقَمْتُمُ	الصَّلٰوةَ	وَاٰتَيْتُمُ	الزَّكٰوةَ	وَاٰمَنْتُمْ
बेशक मैं	साथ हूं तुम्हारे	अलबत्ता अगर	क़ायम की तुमने	नमाज़	और दी तुमने	ज़कात	और ईमान लाए तुम

بِرُسُلِيْ	وَعَزَّرْتُمُوْهُمْ	وَاَقْرَضْتُمُ	اللّٰهَ	قَرْضًا	حَسَنًا	لَّاُكَفِّرَنَّ
मेरे रसूलों पर	और मदद की तुमने उनकी	और क़र्ज़ दिया तुमने	अल्लाह को	क़र्ज़	अच्छा	अलबत्ता मैं ज़रूर दूर कर दूंगा

عَنْكُمْ	سَيِّاٰتِكُمْ	وَلَاُدْخِلَنَّكُمْ	جَنّٰتٍ	تَجْرِيْ	مِنْ تَحْتِهَا
तुमसे	बुराईयां तुम्हारी	और अलबत्ता मैं ज़रूर दाख़िल करुंगा तुम्हें	बाग़ात में	बहती हैं	उनके नीचे से

الْاَنْهٰرُ ۚ	فَمَنْ	كَفَرَ	بَعْدَ	ذٰلِكَ	مِنْكُمْ	فَقَدْ	ضَلَّ
नहरें	तो जिसने	कुफ़्र किया	बाद	इसके	तुम में से	तो तहक़ीक़	वो भटक गया

سَوَآءَ	السَّبِيْلِ ﴿12﴾	فَبِمَا	نَقْضِهِمْ	مِّيْثَاقَهُمْ	لَعَنّٰهُمْ	وَجَعَلْنَا	
सीधे	रास्ते से	तो बवजह	उनके तोड़ने के	अपने पुख़्ता अहद को	लानत की हमने उन पर	और कर दिया हमने	

قُلُوْبَهُمْ	قٰسِيَةً ۚ	يُحَرِّفُوْنَ	الْكَلِمَ	عَنْ مَّوَاضِعِهٖ ۙ	وَنَسُوْا
उनके दिलों को	सख़्त	वो तब्दील कर देते हैं	अलफ़ाज़ को	उनकी जगहों से	और वो भूल गए हैं

حَظًّا	مِّمَّا	ذُكِّرُوْا	بِهٖ ۚ	وَلَا تَزَالُ	تَطَّلِعُ	عَلٰى خَآئِنَةٍ
बड़ा हिस्सा	उसमें से जो	वो नसीहत किए गऐ थे	जिसकी	और हमेशा	आप इत्तला पाते रहते हैं	किसी ना किसी ख़यानत पर

مِّنْهُمْ	اِلَّا	قَلِيْلًا	مِّنْهُمْ	فَاعْفُ	عَنْهُمْ	وَاصْفَحْ ؕ	اِنَّ
उनकी तरफ़ से	मगर	बहुत थोड़े	उनमें से	पस माफ़ कर दीजिए	उन्हें	और दरगुज़र कीजिए	बेशक

اللّٰهَ	يُحِبُّ	الْمُحْسِنِيْنَ ﴿13﴾	وَمِنَ الَّذِيْنَ	قَالُوْٓا	اِنَّا	نَصٰرٰٓى
अल्लाह	वो मोहब्बत रखता है	एहसान करने वालों से	और उनमें से जिन्होंने	कहा	बेशक हम	नस्रानी हैं

اَخَذْنَا	مِيْثَاقَهُمْ	فَنَسُوْا	حَظًّا	مِّمَّا	ذُكِّرُوْا	بِهٖ ۠
लिया हमने	पुख़्ता अहद उनका	तो वो भूल गए	एक हिस्सा	उसमें से जो	वो नसीहत किए गए थे	जिसकी

فَاَغْرَيْنَا	بَيْنَهُمُ	الْعَدَاوَةَ	وَالْبَغْضَآءَ	اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ؕ	وَسَوْفَ
तो डाल दिया हमने	दर्मियान उनके	अदावत	और बुग़्ज़ को	क़यामत के दिन तक	और अनक़रीब

يُنَبِّئُهُمُ	اللّٰهُ	بِمَا	كَانُوْا	يَصْنَعُوْنَ ﴿14﴾	يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ	قَدْ
ख़बर देगा उन्हें	अल्लाह	उसकी जो	थे वो	वो करते/बनाते	ऐ अहले किताब	तहक़ीक़

جَآءَكُمْ	رَسُوْلُنَا	يُبَيِّنُ	لَكُمْ	كَثِيْرًا	مِّمَّا	كُنْتُمْ
आ गया तुम्हारे पास	रसूल हमारा	जो वाज़ेह करता है	तुम्हारे लिए	बकसरत	उसमें से जो	थे तुम

تُخْفُوْنَ	مِنَ الْكِتٰبِ	وَيَعْفُوْا	عَنْ كَثِيْرٍ ؕ	قَدْ	جَآءَكُمْ
तुम छुपाते	किताब में से	और वो दरगुज़र करता है	बहुत सी (बातों) से	तहक़ीक़	आ गया तुम्हारे पास

مِّنَ اللّٰهِ	نُوْرٌ	وَّكِتٰبٌ	مُّبِيْنٌ ﴿15﴾	يَّهْدِيْ	بِهِ	اللّٰهُ	مَنِ
अल्लाह की तरफ़ से	एक नूर	और किताब	वाज़ेह	हिदायत देता है	साथ इसके	अल्लाह	उस को जो

اتَّبَعَ	رِضْوَانَهٗ	سُبُلَ	السَّلٰمِ	وَيُخْرِجُهُمْ	مِّنَ الظُّلُمٰتِ
पैरवी करे	उसकी रज़ामंदी की	रास्तों की (तरफ़)	सलामती के	और वो निकालता है उन्हें	अंधेरों से

اِلَى النُّوْرِ	بِاِذْنِهٖ	وَيَهْدِيْهِمْ	اِلٰى صِرَاطٍ	مُّسْتَقِيْمٍ ﴿16﴾	لَقَدْ
तरफ़ रोशनी के	अपने इज़्न से	और वो हिदायत देता है उन्हें	तरफ़ रास्ते	सीधे के	अलबत्ता तहक़ीक़

كَفَرَ	الَّذِيْنَ	قَالُوْٓا	اِنَّ	اللّٰهَ	هُوَ	الْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ ؕ	قُلْ
कुफ़्र किया	जिन्होंने	कहा	बेशक	अल्लाह	वो ही	मसीह इबने मरियम है	कह दीजिए

فَمَنْ	يَّمْلِكُ	مِنَ اللّٰهِ	شَيْـًٔا	اِنْ	اَرَادَ	اَنْ	يُّهْلِكَ
तो कौन	मालिक होगा	अल्लाह से	किसी चीज़ का	अगर	उसने इरादा किया	कि	वो हलाक कर दे

الْمَسِيْحَ ابْنَ مَرْيَمَ	وَاُمُّهٗ	وَمَنْ	فِي الْاَرْضِ	جَمِيْعًا ؕ	وَلِلّٰهِ
मसीह इबने मरियम को	और उसकी मां को	और जो भी	ज़मीन में हैं	सबके सबको	और अल्लाह ही के लिए है

مُلْكُ	السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضِ	وَمَا	بَيْنَهُمَا ؕ	يَخْلُقُ	مَا	يَشَآءُ ؕ
बादशाहत	आसमानों	और ज़मीन की	और जो कुछ	दर्मियान है इन दोनों के	वो पैदा करता है	जो	वो चाहता है

وَاللّٰهُ	عَلٰى	كُلِّ	شَىْءٍ	قَدِيْرٌ ⑰	وَقَالَتِ	الْيَهُوْدُ	وَالنَّصٰرٰى	نَحْنُ
और अल्लाह	ऊपर	हर	चीज़ के	ख़ूब क़ादिर है	और कहा	यहूद	और नसारा ने	हम

اَبْنٰٓؤُا	اللّٰهِ	وَاَحِبَّآؤُهٗ ؕ	قُلْ	فَلِمَ	يُعَذِّبُكُمْ	بِذُنُوْبِكُمْ ؕ
बेटे हैं	अल्लाह के	और उसके प्यारे हैं	कह दीजिए	फिर क्यों	वो अज़ाब देता है तुम्हें	बवजह तुम्हारे गुनाहों के

بَلْ	اَنْتُمْ	بَشَرٌ	مِّمَّنْ	خَلَقَ ؕ	يَغْفِرُ	لِمَنْ	يَّشَآءُ
बल्कि	तुम	एक इंसान हो	उनमें से जिन्हें	उसने पैदा किया	वो बख़्श देगा	जिसे	वो चाहेगा

وَيُعَذِّبُ	مَنْ	يَّشَآءُ ؕ	وَلِلّٰهِ	مُلْكُ	السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضِ	وَمَا
और वो अज़ाब देगा	जिसे	वो चाहेगा	और अल्लाह ही के लिए है	बादशाहत	आसमानों की	और ज़मीन की	और जो

بَيْنَهُمَا ۫	وَاِلَيْهِ	الْمَصِيْرُ ⑱	يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ	قَدْ	جَآءَكُمْ
दर्मियान है इन दोनों के	और तरफ़ उसी के	लौटना है	ऐ अहले किताब	तहक़ीक़	आ गया तुम्हारे पास

رَسُوْلُنَا	يُبَيِّنُ	لَكُمْ	عَلٰى فَتْرَةٍ	مِّنَ الرُّسُلِ	اَنْ	تَقُوْلُوْا	مَا
रसूल हमारा	वो वाज़ेह करता है	तुम्हारे लिए	वक़्फ़े पर	रसूलों के	कि	(ना) तुम कहो	नहीं

جَآءَنَا	مِنْ بَشِيْرٍ	وَّلَا	نَذِيْرٍ ۫	فَقَدْ	جَآءَكُمْ	بَشِيْرٌ
आया हमारे पास	कोई ख़ुशख़बरी देने वाला	और ना	कोई डराने वाला	पस तहक़ीक़	आ गया तुम्हारे पास	ख़ुशख़बरी देने वाला

ع 3 8 7

وَّنَذِيْرٌ ؕ	وَاللّٰهُ	عَلٰى	كُلِّ	شَىْءٍ	قَدِيْرٌ ع ⑲	وَاِذْ	قَالَ	مُوْسٰى
और डराने वाला	और अल्लाह	ऊपर	हर	चीज़ के	ख़ूब क़ुदरत रखने वाला है	और जब	कहा	मूसा ने

لِقَوْمِهٖ	يٰقَوْمِ	اذْكُرُوْا	نِعْمَةَ	اللّٰهِ	عَلَيْكُمْ	اِذْ	جَعَلَ	فِيْكُمْ
अपनी क़ौम से	ऐ मेरी क़ौम	याद करो	नेअमत	अल्लाह की	जो तुम पर (हुई)	जब	उसने बनाए	तुम में

اَنْۢبِيَآءَ	وَجَعَلَكُمْ	مُّلُوْكًا ۖ	وَّاٰتٰىكُمْ	مَّا	لَمْ	يُؤْتِ	اَحَدًا
अम्बिया	और उसने बनाया तुम्हें	बादशाह	और उसने दिया तुम्हें	वो जो	नहीं	उसने दिया	किसी एक को

مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ﴿20﴾	يٰقَوْمِ	ادْخُلُوا	الْاَرْضَ	الْمُقَدَّسَةَ	الَّتِيْ	كَتَبَ
तमाम जहान वालों में से	ऐ मेरी क़ौम	दाख़िल हो जाओ	अरज़े	मुक़द्दस में	वो जो	लिख दी

اللّٰهُ	لَكُمْ	وَلَا	تَرْتَدُّوْا	عَلٰٓى اَدْبَارِكُمْ	فَتَنْقَلِبُوْا	خٰسِرِيْنَ ﴿21﴾
अल्लाह ने	तुम्हारे लिए	और ना	तुम फिर जाना	अपनी पुश्तों पर	वरना तुम लौट जाओगे	ख़सारा पाने वाले होकर

قَالُوْا	يٰمُوْسٰٓى	اِنَّ	فِيْهَا	قَوْمًا	جَبَّارِيْنَ ۖ	وَاِنَّا	لَنْ
उन्होंने कहा	ऐ मूसा	बेशक	उसमें	एक क़ौम है	बड़े ज़बरदस्त लोगों की	और बेशक हम	हरगिज़ ना

نَّدْخُلَهَا	حَتّٰى	يَخْرُجُوْا	مِنْهَا ۚ	فَاِنْ	يَّخْرُجُوْا	مِنْهَا
हम दाख़िल होंगे इसमें	यहां तक कि	वो निकल जाऐं	उससे	फिर अगर	वो निकल जाऐं	उससे

فَاِنَّا	دٰخِلُوْنَ ﴿22﴾	قَالَ	رَجُلٰنِ	مِنَ الَّذِيْنَ	يَخَافُوْنَ	اَنْعَمَ
तो बेशक हम	दाख़िल होने वाले हैं	कहा	दो आदमियों ने	उनमें से जो	डरते थे	इनाम किया था

اللّٰهُ	عَلَيْهِمَا	ادْخُلُوْا	عَلَيْهِمُ	الْبَابَ ۚ	فَاِذَا	دَخَلْتُمُوْهُ	فَاِنَّكُمْ
अल्लाह ने	उन दोनो पर	दाख़िल हो जाओ	उन पर	दरवाज़े से	फिर जब	तुम दाख़िल हो जाओगे उसमें	तो बेशक तुम

غٰلِبُوْنَ ۚ۬	وَعَلَى اللّٰهِ	فَتَوَكَّلُوْٓا	اِنْ	كُنْتُمْ	مُّؤْمِنِيْنَ ﴿23﴾	قَالُوْا
ग़ालिब आने वाले हो	और अल्लाह ही पर	पस तुम तवक्कल करो	अगर	हो तुम	ईमान लाने वाले	उन्होंने कहा

يٰمُوْسٰٓى	اِنَّا	لَنْ	نَّدْخُلَهَآ	اَبَدًا	مَّا دَامُوْا	فِيْهَا	فَاذْهَبْ
ऐ मूसा	बेशक हम	हरगिज़ नहीं	हम दाख़िल होंगे उसमें	कभी भी	जब तक वो रहेंगे	उसमें	पस जाओ

اَنْتَ	وَرَبُّكَ	فَقَاتِلَآ	اِنَّا	هٰهُنَا	قٰعِدُوْنَ ﴿24﴾	قَالَ	رَبِّ
तुम	और रब तुम्हारा	पस तुम दोनों जंग करो	बेशक हम	यहीं	बैठने वाले हैं	कहा	ऐ मेरे रब

اِنِّيْ	لَآ اَمْلِكُ	اِلَّا	نَفْسِيْ	وَاَخِيْ	فَافْرُقْ	بَيْنَنَا	وَبَيْنَ
बेशक मैं	नहीं मैं मालिक	मगर	अपने नफ़्स का	और अपने भाई का	पस जुदाई डाल दे	दर्मियान हमारे	और दर्मियान

الْقَوْمِ	الْفٰسِقِيْنَ ﴿25﴾	قَالَ	فَاِنَّهَا	مُحَرَّمَةٌ	عَلَيْهِمْ	اَرْبَعِيْنَ
उन लोगों के	जो फ़ासिक़ है	फ़रमाया	पस बेशक वो	हराम कर दी गई	उन पर	चालीस

سَنَةً ۚ	يَتِيْهُوْنَ	فِى الْاَرْضِ ؕ	فَلَا	تَاْسَ	عَلَى الْقَوْمِ
साल	वो भटकते फिरेंगे	ज़मीन में	पस ना	तुम अफ़सोस करो	उन लोगों पर

ع 4 7 8 وقف لازم

الْفٰسِقِيْنَ ﴿26﴾ ع	وَاتْلُ	عَلَيْهِمْ	نَبَاَ	ابْنَىْ	اٰدَمَ	بِالْحَقِّ ۘ	اِذْ
जो फ़ासिक़ हैं	और पढ़िए	इन पर	ख़बर	दो बेटों की	आदम के	साथ हक़ के	जब

قُرْبَانًا	فَتُقُبِّلَ	مِنْ اَحَدِهِمَا	وَلَمْ	يُتَقَبَّلْ	
क़ुर्बानी करना	तो वो क़ुबूल कर ली गई	उन दोनों में एक से	और ना	वो क़ुबूल की गई	
उन दोनों ने क़ुर्बानी की					

مِنَ الْاٰخَرِ ؕ	قَالَ	لَاَقْتُلَنَّكَ ؕ	قَالَ	اِنَّمَا	يَتَقَبَّلُ	اللّٰهُ
दूसरे से	कहा	अलबत्ता मैं ज़रूर क़त्ल करुंगा तुझे	कहा	बेशक	क़ुबूल करता है	अल्लाह

النصف

مِنَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿27﴾	لَئِنْ	بَسَطْتَّ	اِلَىَّ	يَدَكَ	لِتَقْتُلَنِىْ	مَآ
मुत्तक़ी लोगों से	अलबत्ता अगर	बढ़ाया तू ने	मेरी तरफ़	हाथ अपना	ताकि तू क़त्ल कर दे मुझे	नहीं

اَنَا	بِبَاسِطٍ	يَّدِىَ	اِلَيْكَ	لِاَقْتُلَكَ ۚ	اِنِّىْٓ	اَخَافُ	اللّٰهَ
मैं	बढ़ाने वाला	हाथ अपना	तरफ़ तेरे	ताकि मैं क़त्ल करदुं तुझे	बेशक मैं	डरता हूं	अल्लाह से

رَبَّ	الْعٰلَمِيْنَ ﴿28﴾	اِنِّىْٓ	اُرِيْدُ	اَنْ	تَبُوْٓاَ	بِاِثْمِىْ	وَاِثْمِكَ
जो रब है	तमाम जहानों का	बेशक मैं	मैं चाहता हूं	कि	तू पलटे	साथ मेरे गुनाह	और अपने गुनाह के

فَتَكُوْنَ	مِنْ اَصْحٰبِ	النَّارِ ۚ	وَذٰلِكَ	جَزٰٓؤُا	الظّٰلِمِيْنَ ﴿29﴾ ۚ	فَطَوَّعَتْ
फिर तू हो जाए	साथियों में से	आग के	और ये	बदला है	ज़ालिमों का	तो आसान कर दिया

لَهٗ	نَفْسُهٗ	قَتْلَ	اَخِيْهِ	فَقَتَلَهٗ	فَاَصْبَحَ	مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿30﴾
उसके लिए	उसके नफ़्स ने	क़त्ल करना	अपने भाई का	तो उसने क़त्ल कर दिया उसे	पस वो हो गया	ख़सारा पाने वालों में से

فَبَعَثَ	اللّٰهُ	غُرَابًا	يَّبْحَثُ	فِي الْاَرْضِ	لِيُرِيَهٗ	كَيْفَ	يُوَارِيْ
फिर भेजा	अल्लाह ने	एक कौवा	वो खोदता था	ज़मीन में	ताकि वो दिखाए उसे	किस तरह	वो छुपाए

سَوْءَةَ	اَخِيْهِ ؕ	قَالَ	يٰوَيْلَتٰٓى	اَعَجَزْتُ	اَنْ	اَكُوْنَ	مِثْلَ
लाश	अपने भाई की	उसने कहा	हाय अफ़सोस मुझ पर	क्या आजिज़ हुआ मैं	इससे (भी) कि	मैं हो जाऊं	मानिंद

هٰذَا	الْغُرَابِ	فَاُوَارِيَ	سَوْءَةَ	اَخِيْ ۚ	فَاَصْبَحَ	مِنَ النّٰدِمِيْنَ ﴿31﴾ ۚۛ	
इस	कौवे के	कि मैं छुपा दूं	लाश	अपने भाई की	तो वो हो गया	नादिम होने वालों में से	

مِنْ اَجْلِ	ذٰلِكَ ۚۛ	كَتَبْنَا	عَلٰى بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ	اَنَّهٗ	مَنْ	قَتَلَ	
बवजह	इसके	लिख दिया हमने	बनी इस्राईल पर	कि बेशक वो	जिसने	क़त्ल किया	

وقف النبی صلی اللہ علیہ وسلم
معانقة 5

نَفْسًا	بِغَيْرِ	نَفْسٍ	اَوْ	فَسَادٍ	فِي الْاَرْضِ	فَكَاَنَّمَا	قَتَلَ
किसी जान को	बग़ैर	किसी जान के	या	फ़साद करने के	ज़मीन में	तो गोया कि	उसने क़त्ल कर दिया

النَّاسَ	جَمِيْعًا ؕ	وَمَنْ	اَحْيَاهَا	فَكَاَنَّمَآ	اَحْيَا	النَّاسَ	جَمِيْعًا ؕ
लोगों को	सबके सबको	और जिसने	ज़िंदगी बचाई उसकी	तो गोया कि	उसने ज़िंदा किया	लोगों को	सबके सबको

وَلَقَدْ	جَآءَتْهُمْ	رُسُلُنَا	بِالْبَيِّنٰتِ ۫	ثُمَّ	اِنَّ	كَثِيْرًا	مِّنْهُمْ	بَعْدَ
और अलबत्ता तहक़ीक़	आए उनके पास	रसूल हमारे	साथ वाज़ेह निशानियों के	फिर	बेशक	बहुत से	उनमें से	बाद

ذٰلِكَ	فِي الْاَرْضِ	لَمُسْرِفُوْنَ ﴿32﴾	اِنَّمَا	جَزٰٓؤُا	الَّذِيْنَ	يُحَارِبُوْنَ	
इसके	ज़मीन में	अलबत्ता ज़्यादती करने वाले हैं	बेशक	बदला	उनका जो	जंग करते हैं	

اللّٰهَ	وَرَسُوْلَهٗ	وَيَسْعَوْنَ	فِي الْاَرْضِ	فَسَادًا	اَنْ	يُّقَتَّلُوْٓا	اَوْ
अल्लाह से	और उसके रसूल से	और वो दौड़ धूप करते हैं	ज़मीन में	फ़साद के लिए	ये कि	वो क़त्ल कर दिए जाऐं	या

يُصَلَّبُوْٓا	اَوْ تُقَطَّعَ	اَيْدِيْهِمْ	وَاَرْجُلُهُمْ	مِّنْ خِلَافٍ	اَوْ يُنْفَوْا
वो सूली चढ़ा दिए जाऐं	या काट दिए जाऐं	हाथ उनके	और पांव उनके	मुख़ालिफ़ सिम्त से	या वो निकाल दिए जाऐं

مِنَ الْاَرْضِ ؕ	ذٰلِكَ	لَهُمْ	خِزْيٌ	فِي الدُّنْيَا	وَلَهُمْ	فِي الْاٰخِرَةِ
इस ज़मीन से	ये	उनके लिए	रुस्वाई है	दुनिया में	और उनके लिए	आख़िरत में

عَذَابٌ	عَظِيْمٌ ﴿33﴾	اِلَّا	الَّذِيْنَ	تَابُوْا	مِنْ قَبْلِ	اَنْ	تَقْدِرُوْا
अज़ाब है	बहुत बड़ा	सिवाए	उन लोगों के जो	तौबा करें	इससे क़ब्ल	कि	तुम क़ादिर हो जाओ

ع 5 8 9

عَلَيْهِمْ ۚ	فَاعْلَمُوْٓا	اَنَّ	اللّٰهَ	غَفُوْرٌ	رَّحِيْمٌ ﴿34﴾ ع	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ	
उन पर	तो जान लो	बेशक	अल्लाह	बहुत बख़्शने वाला है	निहायत रहम करने वाला है	ऐ लोगो जो	

اٰمَنُوا	اتَّقُوا	اللّٰهَ	وَابْتَغُوْٓا	اِلَيْهِ	الْوَسِيْلَةَ	وَجَاهِدُوْا	فِيْ سَبِيْلِهٖ
ईमान लाए हो	डरो	अल्लाह से	और तलाश करो	तरफ़ उसके	वसीला/ज़रिया	और जिहाद करो	उसके रास्ते में

لَعَلَّكُمْ	تُفْلِحُوْنَ ﴿35﴾	اِنَّ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	لَوْ	اَنَّ	لَهُمْ
ताकि तुम	तुम फ़लाह पा जाओ	बेशक	वो जिन्होंने	कुफ़्र किया	अगर	बेशक	उनके लिए हो

مَّا	فِي الْاَرْضِ	جَمِيْعًا	وَّمِثْلَهٗ	مَعَهٗ	لِيَفْتَدُوْا	بِهٖ
जो कुछ	ज़मीन में है	सारे का सारा	और मानिंद उसी के	साथ उसके	ताकि वो फ़िदया दें	साथ उसके

مِنْ عَذَابِ	يَوْمِ	الْقِيٰمَةِ	مَا	تُقُبِّلَ	مِنْهُمْ ۚ	وَلَهُمْ	عَذَابٌ
अज़ाब से(बचने के लिए)	दिन	क़यामत के	ना	वो क़ुबूल किया जाएगा	उनसे	और उनके लिए	अज़ाब है

اَلِيْمٌ ﴿36﴾	يُرِيْدُوْنَ	اَنْ	يَّخْرُجُوْا	مِنَ النَّارِ	وَمَا	هُمْ	بِخٰرِجِيْنَ
दर्दनाक	वो चाहेंगे	कि	वो निकल जाऐं	आग से	और नहीं	वो	निकलने वाले

مِنْهَا ۘ	وَلَهُمْ	عَذَابٌ	مُّقِيْمٌ ﴿37﴾	وَالسَّارِقُ	وَالسَّارِقَةُ	فَاقْطَعُوْٓا
उससे	और उनके लिए	अज़ाब है	क़ायम रहने वाला	और चोर मर्द	और चोर औरत	पस काट दो

اَيْدِيَهُمَا	جَزَآءً	بِمَا	كَسَبَا	نَكَالًا	مِّنَ اللّٰهِ ؕ	وَاللّٰهُ
हाथ उन दोनों के	बदला है	बवजह उसके जो	उन दोनों ने कमाया	इबरतनाक सज़ा है	अल्लाह की तरफ़ से	और अल्लाह

وَاَصْلَحَ	ظُلْمِهٖ	مِنْۢ بَعْدِ	تَابَ	فَمَنْ	حَكِيْمٌ (38)	عَزِيْزٌ
और वो इस्लाह कर ले	अपने ज़ुल्म के	बाद	तौबा कर ले	तो जो कोई	ख़ूब हिक्मत वाला है	बहुत ज़बरदस्त है

اَلَمْ	رَّحِيْمٌ (39)	غَفُوْرٌ	اللّٰهَ	اِنَّ	عَلَيْهِ ؕ	يَتُوْبُ	اللّٰهَ	فَاِنَّ
क्या नहीं	निहायत रहम करने वाला है	बहुत बख़्शने	अल्लाह	बेशक	उस पर	वो मेहरबान होगा	अल्लाह	तो बेशक

يُعَذِّبُ	وَالْاَرْضِ ؕ	السَّمٰوٰتِ	مُلْكُ	لَهٗ	اللّٰهَ	اَنَّ	تَعْلَمْ
वो अज़ाब देता है	और ज़मीन की	आसमानों	बादशाहत	उसी के लिए है	अल्लाह	बेशक	आपने जाना

شَيْءٍ	كُلِّ	عَلٰى	وَاللّٰهُ	يَّشَآءُ ؕ	لِمَنْ	وَيَغْفِرُ	يَّشَآءُ	مَنْ
चीज़ के	हर	ऊपर	और अल्लाह	वो चाहता है	जिसे	और वो बख़्श देता है	वो चाहता है	जिसे

يُسَارِعُوْنَ	الَّذِيْنَ	لَا يَحْزُنْكَ	الرَّسُوْلُ	يٰۤاَيُّهَا	قَدِيْرٌ (40)
दौड़ धूप करते हैं	वो लोग जो	ना ग़मगीन करें आपको	रसूल	ऐ	ख़ूब क़ुदरत रखने वाला है

تُؤْمِنْ	وَلَمْ	بِاَفْوَاهِهِمْ	اٰمَنَّا	قَالُوْۤا	مِنَ الَّذِيْنَ	فِي الْكُفْرِ
ईमान लाए	हालांकि नहीं	अपने मुंहों से	ईमान लाए हम	कहते हैं	उन लोगों में से जो	कुफ़्र में

سَمّٰعُوْنَ	لِلْكَذِبِ	سَمّٰعُوْنَ	هَادُوْا ۛۚ	وَمِنَ الَّذِيْنَ	قُلُوْبُهُمْ ۛۚ
बहुत ज़्यादा सुनने वाले हैं	झूठ को	बहुत ज़्यादा सुनने वाले हैं	यहूदी बन गए	और उनमें से जो	दिल उनके

ع 3

الوقف على الاول اجوز 12

مِنْۢ بَعْدِ	الْكَلِمَ	يُحَرِّفُوْنَ	يَاْتُوْكَ ؕ	لَمْ	لِقَوْمٍ اٰخَرِيْنَ ۙ
बाद	अलफ़ाज़ को	वो बदल देते हैं	वो आए आपके पास	नहीं	दूसरी क़ौम के लिए

لَّمْ	وَاِنْ	فَخُذُوْهُ	هٰذَا	اُوْتِيْتُمْ	اِنْ	يَقُوْلُوْنَ	مَوَاضِعِهٖ ۚ
ना	और अगर	तो ले लो इसे	ये	दिए जाओ तुम	अगर	वो कहते हैं	उनकी जगहें (मुक़र्रर होने के)

تَمْلِكَ	فَلَنْ	فِتْنَتَهٗ	اللّٰهُ	يُّرِدِ	وَمَنْ	فَاحْذَرُوْا ؕ	تُؤْتَوْهُ
आप मालिक हो सकते	तो हरगिज़ नहीं	उसकी आज़माइश का	अल्लाह	इरादा कर ले	और वो जो	पस बचो	तुम दिए जाओ इसे

لَهٗ	مِنَ اللّٰهِ	شَيْـًٔا ۭ	اُولٰٓئِكَ	الَّذِيْنَ	لَمْ	يُرِدِ	اللّٰهُ	اَنْ
उसके लिए	अल्लाह से	किसी चीज़ के	यही लोग हैं	वो जो	नहीं	चाहा	अल्लाह ने	कि

يُّطَهِّرَ	قُلُوْبَهُمْ ۭ	لَهُمْ	فِي الدُّنْيَا	خِزْيٌ ښ	وَّلَهُمْ	فِي الْاٰخِرَةِ
वो पाक करे	उनके दिलों को	उनके लिए	दुनिया में	रुस्वाई है	और उनके लिए	आख़िरत में

عَذَابٌ	عَظِيْمٌ (41)	سَمّٰعُوْنَ	لِلْكَذِبِ	اَكّٰلُوْنَ	لِلسُّحْتِ ۭ
अज़ाब है	बहुत बड़ा	बहुत ज़्यादा सुनने वाले हैं	झूठ को	बहुत ज़्यादा खाने वाले हैं	हराम को

فَاِنْ	جَاۗءُوْكَ	فَاحْكُمْ	بَيْنَهُمْ	اَوْ	اَعْرِضْ	عَنْهُمْ ۚ	وَاِنْ
फिर अगर	वो आएं आपके पास	तो फ़ैसला कीजिए	दर्मियान उनके	या	ऐराज़ कीजिए	उनसे	और अगर

تُعْرِضْ	عَنْهُمْ	فَلَنْ	يَّضُرُّوْكَ	شَيْـًٔا ۭ	وَاِنْ	حَكَمْتَ
आप ऐराज़ करेंगे	उनसे	तो हरगिज़ नहीं	वो नुक़्सान पहुंचा सकते आपको	कुछ भी	और अगर	फ़ैसला करें आप

فَاحْكُمْ	بَيْنَهُمْ	بِالْقِسْطِ ۭ	اِنَّ	اللّٰهَ	يُحِبُّ	الْمُقْسِطِيْنَ (42)
तो फ़ैसला कीजिए	दर्मियान उनके	साथ इंसाफ़ के	बेशक	अल्लाह	वो मोहब्बत रखता है	इंसाफ़ करने वालों से

وَكَيْفَ	يُحَكِّمُوْنَكَ	وَعِنْدَهُمُ	التَّوْرٰىةُ	فِيْهَا	حُكْمُ	اللّٰهِ	ثُمَّ
और किस तरह	वो मुंसिफ़ बनाते हैं आपको	हालांकि उनके पास	तौरात है	जिसमें	हुक्म है	अल्लाह का	फिर

ع 6 9 10

يَتَوَلَّوْنَ	مِنْۢ بَعْدِ	ذٰلِكَ ۭ	وَمَآ	اُولٰٓئِكَ	بِالْمُؤْمِنِيْنَ (43) ع	اِنَّآ
वो मुंह मोड़ जाते हैं	बाद	उसके	और नहीं	ये लोग	ईमान लाने वाले	बेशक हम

اَنْزَلْنَا	التَّوْرٰىةَ	فِيْهَا	هُدًى	وَّنُوْرٌ ۚ	يَحْكُمُ	بِهَا	النَّبِيُّوْنَ
नाज़िल की हमने	तौरात	उस में	हिदायत	और नूर था	फ़ैसला करते थे	साथ उसके	अम्बिया

الَّذِيْنَ	اَسْلَمُوْا	لِلَّذِيْنَ	هَادُوْا	وَالرَّبّٰنِيُّوْنَ	وَالْاَحْبَارُ	بِمَا
वो जो	इस्लाम लाए थे	उनके लिए जो	यहूदी बन गए थे	और रब्बानी/रब वाले भी	और उलमा/फ़ुक़्हा भी	बवजह इसके जो

اسْتُحْفِظُوْا	مِنْ كِتٰبِ اللّٰهِ	وَ كَانُوْا	عَلَيْهِ	شُهَدَآءَ ۚ	فَلَا	تَخْشَوُا
वो मुहाफ़िज़ बनाए गए थे	अल्लाह की किताब के	और थे वो	इस पर	गवाह	तो ना	तुम डरो

النَّاسَ	وَاخْشَوْنِ	وَلَا	تَشْتَرُوْا	بِاٰيٰتِيْ	ثَمَنًا	قَلِيْلًا ؕ	وَمَنْ
लोगों से	और डरो मुझसे	और ना	तुम लो	बदले मेरी आयात के	क़ीमत	थोड़ी	और जो

لَّمْ	يَحْكُمْ	بِمَآ	اَنْزَلَ	اللّٰهُ	فَاُولٰٓئِكَ	هُمُ	الْكٰفِرُوْنَ ﴿44﴾
ना	फ़ैसला करे	इस के मुताबिक़ जो	नाज़िल किया	अल्लाह ने	तो यही लोग हैं	वो	जो काफ़िर हैं

وَ كَتَبْنَا	عَلَيْهِمْ	فِيْهَآ	اَنَّ	النَّفْسَ	بِالنَّفْسِ ۙ	وَالْعَيْنَ
और लिख दिया हमने	उन पर	इसमें	बेशक	जान	बदले जान के	और आंख

بِالْعَيْنِ	وَالْاَنْفَ	بِالْاَنْفِ	وَالْاُذُنَ	بِالْاُذُنِ	وَالسِّنَّ	بِالسِّنِّ ۙ
बदले आंख के	और नाक	बदले नाक के	और कान	बदले कान के	और दांत	बदले दांत के

وَالْجُرُوْحَ	قِصَاصٌ ؕ	فَمَنْ	تَصَدَّقَ	بِهٖ	فَهُوَ	كَفَّارَةٌ	لَّهٗ ؕ
और तमाम ज़ख़्मों का भी	बदला है	तो जो कोई	सदक़ा(माफ़) कर दे	उसको	तो वो	कफ़्फ़ारा होगा	उसके लिए

وَمَنْ	لَّمْ	يَحْكُمْ	بِمَآ	اَنْزَلَ	اللّٰهُ	فَاُولٰٓئِكَ	هُمُ
और जो कोई	ना	फ़ैसला करे	इसके मुताबिक़ जो	नाज़िल किया	अल्लाह ने	तो यही लोग हैं	वो

الظّٰلِمُوْنَ ﴿45﴾	وَقَفَّيْنَا	عَلٰٓى اٰثَارِهِمْ	بِعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ	مُصَدِّقًا
जो ज़ालिम हैं	और पीछे भेजा हमने	उनके आसार पर	ईसा इबने मरियम को	तस्दीक़ करने वाला

لِّمَا	بَيْنَ يَدَيْهِ	مِنَ التَّوْرٰىةِ ۫	وَاٰتَيْنٰهُ	الْاِنْجِيْلَ	فِيْهِ
उसकी जो	पहले है उससे	तौरात में से	और दी हमने उसे	इंजील	उसमें थी

هُدًى	وَّنُوْرٌ ۙ	وَّمُصَدِّقًا	لِّمَا	بَيْنَ يَدَيْهِ	مِنَ التَّوْرٰىةِ
हिदायत	और नूर	और तस्दीक़ करने वाली	उसकी जो	पहले है उससे	तौरात में से

وَهُدًى	وَّمَوْعِظَةً	لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿46﴾ ط	وَلْيَحْكُمْ	اَهْلُ الْاِنْجِيْلِ	بِمَآ
और हिदायत	और नसीहत	मुत्तक़ी लोगों के लिए	और चाहिए कि फ़ैसला करें	अहले इंजील	उसके मुताबिक़ जो

اَنْزَلَ	اللّٰهُ	فِيْهِ ط	وَمَنْ	لَّمْ	يَحْكُمْ	بِمَآ	اَنْزَلَ	اللّٰهُ
नाज़िल किया	अल्लाह ने	उस में	और जो	ना	फ़ैसला करे	उसके मुताबिक़ जो	नाज़िल किया	अल्लाह ने

فَاُولٰٓئِكَ	هُمُ	الْفٰسِقُوْنَ ﴿47﴾	وَاَنْزَلْنَآ	اِلَيْكَ	الْكِتٰبَ	بِالْحَقِّ
तो यही लोग हैं	वो	जो फ़ासिक़ हैं	और नाज़िल की हमने	तरफ़ आपके	किताब	साथ हक़ के

مُصَدِّقًا	لِّمَا	بَيْنَ يَدَيْهِ	مِنَ الْكِتٰبِ	وَمُهَيْمِنًا	عَلَيْهِ
तस्दीक़ करने वाली	उसकी जो	पहले है इससे	किताबों में से	और निगहबान है	इस पर

فَاحْكُمْ	بَيْنَهُمْ	بِمَآ	اَنْزَلَ	اللّٰهُ	وَلَا	تَتَّبِعْ	اَهْوَآءَهُمْ
पस फ़ैसला कीजिए	दर्मियान उनके	उसके मुताबिक़ जो	नाज़िल किया	अल्लाह ने	और ना	आप पैरवी कीजिए	उनकी ख़्वाहिशात की

عَمَّا	جَآءَكَ	مِنَ الْحَقِّ ط	لِكُلٍّ	جَعَلْنَا	مِنْكُمْ	شِرْعَةً
उससे (हट कर) जो	आ गया आपके पास	हक़ में से	हर एक के लिए	बनाया हमने	तुम में से	एक रास्ता

وَّمِنْهَاجًا ط	وَلَوْ	شَآءَ	اللّٰهُ	لَجَعَلَكُمْ	اُمَّةً	وَّاحِدَةً	وَّلٰكِنْ
और एक तरीक़ा	और अगर	चाहता	अल्लाह	अलबत्ता वो बना देता तुम्हें	उम्मत	एक ही	और लेकिन

لِّيَبْلُوَكُمْ	فِيْ مَآ	اٰتٰىكُمْ	فَاسْتَبِقُوا	الْخَيْرٰتِ ط	اِلَى اللّٰهِ
इसलिए कि वो आज़माए तुम्हें	उसमें जो	उसने दिया तुम्हें	पस सबक़त करो/आगे बढ़ो	नेकियों में	तरफ़ अल्लाह ही के

مَرْجِعُكُمْ	جَمِيْعًا	فَيُنَبِّئُكُمْ	بِمَا	كُنْتُمْ	فِيْهِ	تَخْتَلِفُوْنَ ﴿48﴾ لا
लौटना है तुम्हारा	सबके सबका	फिर वो बता देगा तुम्हें	वो जो	थे तुम	जिसमें	तुम इख़्तिलाफ़ करते

وَاَنِ	احْكُمْ	بَيْنَهُمْ	بِمَآ	اَنْزَلَ	اللّٰهُ	وَلَا	تَتَّبِعْ
और ये कि	फ़ैसला कीजिए	दर्मियान उनके	उसके मुताबिक़ जो	नाज़िल किया	अल्लाह ने	और ना	आप पैरवी कीजिए

اَهْوَآءَهُمْ	وَاحْذَرْهُمْ	اَنْ	يَّفْتِنُوْكَ	عَنْۢ بَعْضِ	مَآ	اَنْزَلَ
उनकी ख़्वाहिशात की	और मोहतात रहिए उनसे	कि	वो फ़ितने में डालें आपको	बाज़ (उस) से	जो	नाज़िल किया

اللّٰهُ	اِلَيْكَ ؕ	فَاِنْ	تَوَلَّوْا	فَاعْلَمْ	اَنَّمَا	يُرِيْدُ	اللّٰهُ	اَنْ
अल्लाह ने	तरफ़ आपके	फिर अगर	वो मुंह मोड़ जाऐं	तो जान लीजिए	बेशक	चाहता है	अल्लाह	कि

يُّصِيْبَهُمْ	بِبَعْضِ	ذُنُوْبِهِمْ ؕ	وَاِنَّ	كَثِيْرًا	مِّنَ النَّاسِ
वो पहुंचाए उन्हें (मुसीबत)	बवजह बाज़	उनके गुनाहों के	और बेशक	बहुत से	लोगों में से

لَفٰسِقُوْنَ ﴿49﴾	اَفَحُكْمَ	الْجَاهِلِيَّةِ	يَبْغُوْنَ ؕ	وَمَنْ	اَحْسَنُ	مِنَ اللّٰهِ
अलबत्ता फ़ासिक़ हैं	क्या फिर फ़ैसला	जाहिलियत का	वो चाहते हैं	और कौन	ज़्यादा अच्छा है	अल्लाह से

حُكْمًا	لِّقَوْمٍ	يُّوْقِنُوْنَ ﴿50﴾ ع	يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	لَا تَتَّخِذُوا	ع 7 7 11
फ़ैसला करने में	उन लोगों के लिए	जो यक़ीन रखते हैं	ऐ लोगो जो	ईमान लाए हो	ना तुम बनाओ	

وقف لازم
وقف منزل عند البعض
وقف غفران

الْيَهُوْدَ	وَالنَّصٰرٰۤى	اَوْلِيَآءَ ۘ	بَعْضُهُمْ	اَوْلِيَآءُ	بَعْضٍ ؕ	وَمَنْ
यहूद	और नसारा को	दोस्त	बाज़ उनके	दोस्त हैं	बाज़ के	और जो कोई

يَّتَوَلَّهُمْ	مِّنْكُمْ	فَاِنَّهٗ	مِنْهُمْ ؕ	اِنَّ	اللّٰهَ	لَا يَهْدِى	الْقَوْمَ
दोस्त बनाएगा उन्हें	तुम में से	पस बेशक वो	उन्हीं में से है	बेशक	अल्लाह	नहीं वो हिदायत देता	उन लोगों को

الظّٰلِمِيْنَ ﴿51﴾	فَتَرَى	الَّذِيْنَ	فِىْ قُلُوْبِهِمْ	مَّرَضٌ	يُّسَارِعُوْنَ
जो ज़ालिम हैं	फिर आप देखेंगे	उन्हें	दिलों में जिनके	बीमारी है	वो दौड़ धूप करते हैं

فِيْهِمْ	يَقُوْلُوْنَ	نَخْشٰۤى	اَنْ	تُصِيْبَنَا	دَآئِرَةٌ ؕ	فَعَسَى	اللّٰهُ
उनमें	वो कहते हैं	हम डरते हैं	कि	पहुंचेगी हमें	कोई गर्दिश/मुसीबत	तो उम्मीद है	अल्लाह

اَنْ	يَّاْتِىَ	بِالْفَتْحِ	اَوْ	اَمْرٍ	مِّنْ عِنْدِهٖ	فَيُصْبِحُوْا	عَلٰى	مَآ
कि	वो ले आए	फ़तह	या	कोई हुक्म	अपनी तरफ़ से	फिर वो हो जाऐं	उस पर	जो

اَسَرُّوْا	فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ	نٰدِمِيْنَ ﴿52﴾ ط	وَيَقُوْلُ	الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْٓا	اَهٰٓؤُلَآءِ
उन्होंने छुपाया	अपने नफ़्सों में	नादिम	और कहते हैं	वो जो	ईमान लाए	क्या ये हैं

الَّذِيْنَ	اَقْسَمُوْا	بِاللّٰهِ	جَهْدَ	اَيْمَانِهِمْ لا	اِنَّهُمْ	لَمَعَكُمْ ط
वो जिन्होंने	क़समें खाईं	अल्लाह की	पक्की	क़समें अपनी	कि बेशक वो	अलबत्ता साथ हैं तुम्हारे

حَبِطَتْ	اَعْمَالُهُمْ	فَاَصْبَحُوْا	خٰسِرِيْنَ ﴿53﴾	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا
ज़ाया हो गए	आमाल उनके	पस वो हो गए	ख़सारा पाने वाले	ऐ लोगो जो	ईमान लाए हो

الثلثة

مَنْ	يَّرْتَدَّ	مِنْكُمْ	عَنْ دِيْنِهٖ	فَسَوْفَ	يَاْتِى	اللّٰهُ	بِقَوْمٍ
जो कोई	फिर जाएगा	तुम में से	अपने दीन से	तो अनक़रीब	ले आएगा	अल्लाह	ऐसे लोग

يُّحِبُّهُمْ	وَيُحِبُّوْنَهٗٓ لا	اَذِلَّةٍ	عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ	اَعِزَّةٍ
वो मोहब्बत करेगा उनसे	और वो मोहब्बत करेंगे उससे	बहुत नर्म(होंगे)	मोमिनों पर	बहुत सख़्त

عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ز	يُجَاهِدُوْنَ	فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ	وَلَا	يَخَافُوْنَ	لَوْمَةَ
काफ़िरों पर	वो जिहाद करेंगे	अल्लाह के रास्ते में	और ना	वो डरेंगे	मलामत से

لَآئِمٍ ط	ذٰلِكَ	فَضْلُ	اللّٰهِ	يُؤْتِيْهِ	مَنْ	يَّشَآءُ ط	وَاللّٰهُ
मलामत करने वाले की	ये	फ़ज़्ल है	अल्लाह का	वो देता है उसे	जिसे	वो चाहता है	और अल्लाह

وَاسِعٌ	عَلِيْمٌ ﴿54﴾	اِنَّمَا	وَلِيُّكُمُ	اللّٰهُ	وَرَسُوْلُهٗ	وَالَّذِيْنَ
वुसअत वाला है	ख़ूब इल्म वाला है	बेशक	दोस्त तुम्हारा	अल्लाह है	और उसका रसूल	और वो जो

اٰمَنُوا	الَّذِيْنَ	يُقِيْمُوْنَ	الصَّلٰوةَ	وَيُؤْتُوْنَ	الزَّكٰوةَ	وَهُمْ
ईमान लाए	वो जो	क़ायम करते हैं	नमाज़	और वो देते हैं	ज़कात	और वो

رٰكِعُوْنَ ﴿55﴾	وَمَنْ	يَّتَوَلَّ	اللّٰهَ	وَرَسُوْلَهٗ	وَالَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا
रुकूअ करने वाले हैं	और जो कोई	दोस्ती करेगा	अल्लाह से	और उसके रसूल से	और उनसे जो	ईमान लाए

ع 8 6 12

فَاِنَّ	حِزْبَ	اللّٰهِ	هُمُ	الْغٰلِبُوْنَ ﴿56﴾ ع	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا
तो बेशक	गिरोह	अल्लाह का	वही	ग़ालिब आने वाले हैं	ऐ लोगो जो	ईमान लाए हो

لَا تَتَّخِذُوا	الَّذِيْنَ	اتَّخَذُوْا	دِيْنَكُمْ	هُزُوًا	وَّ لَعِبًا	مِّنَ الَّذِيْنَ
ना तुम बनाओ	उनको जिन्होंने	बना लिया	तुम्हारे दीन को	मज़ाक़	और खेल	उनमें से जो

اُوْتُوا	الْكِتٰبَ	مِنْ قَبْلِكُمْ	وَالْكُفَّارَ	اَوْلِيَآءَ ۚ	وَاتَّقُوا	اللّٰهَ
दिए गए	किताब	तुमसे पहले	और काफ़िरों को	दोस्त	और डरो	अल्लाह से

اِنْ	كُنْتُمْ	مُّؤْمِنِيْنَ ﴿57﴾	وَاِذَا	نَادَيْتُمْ	اِلَى الصَّلٰوةِ	اتَّخَذُوْهَا
अगर	हो तुम	ईमान लाने वाले	और जब	पुकारते हो तुम	तरफ़ नमाज़ के	वो बना लेते हैं उसे

هُزُوًا	وَّ لَعِبًا ؕ	ذٰلِكَ	بِاَنَّهُمْ	قَوْمٌ	لَّا يَعْقِلُوْنَ ﴿58﴾	قُلْ
मज़ाक़	और खेल	ये	बवजह इसके कि वो	ऐसे लोग हैं	जो अक़्ल नहीं रखते	कह दीजिए

يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ	هَلْ	تَنْقِمُوْنَ	مِنَّآ	اِلَّآ	اَنْ	اٰمَنَّا	بِاللّٰهِ
ऐ अहले किताब	नहीं	तुम बैर रखते	हमसे	मगर	ये कि	ईमान लाए हम	अल्लाह पर

وَمَآ	اُنْزِلَ	اِلَيْنَا	وَمَآ	اُنْزِلَ	مِنْ قَبْلُ ۙ	وَاَنَّ	اَكْثَرَكُمْ
और जो कुछ	नाज़िल किया गया	तरफ़ हमारे	और जो कुछ	नाज़िल किया गया	इससे पहले	और बेशक	अक्सर तुम्हारे

فٰسِقُوْنَ ﴿59﴾	قُلْ	هَلْ	اُنَبِّئُكُمْ	بِشَرٍّ	مِّنْ ذٰلِكَ	مَثُوْبَةً
फ़ासिक़ हैं	कह दीजिए	क्या	मैं बताऊं तुम्हें	बदतर	उससे	बदले के ऐतबार से

عِنْدَ اللّٰهِ ؕ	مَنْ	لَّعَنَهُ	اللّٰهُ	وَغَضِبَ	عَلَيْهِ	وَجَعَلَ	مِنْهُمُ
अल्लाह के नज़दीक	वो जो	लानत की हो उस पर	अल्लाह ने	और वो ग़ज़बनाक हुआ	उस पर	और उसने बनाए	उनमें से

الْقِرَدَةَ	وَالْخَنَازِيْرَ	وَعَبَدَ	الطَّاغُوْتَ ؕ	اُولٰٓئِكَ	شَرٌّ	مَّكَانًا
बंदर	और ख़िंज़ीर	और जिसने बंदगी की	ताग़ूत की	यही लोग	बदतरीन हैं	दरजे में

وَّاَضَلُّ	عَنْ سَوَآءِ السَّبِيْلِ ﴿60﴾	وَاِذَا	جَآءُوْكُمْ	قَالُوْٓا	اٰمَنَّا
और ज़्यादा भटके हुए	सीधे रास्ते से	और जब	वो आते हैं तुम्हारे पास	वो कहते हैं	ईमान लाए हम

وَقَدْ	دَّخَلُوْا	بِالْكُفْرِ	وَهُمْ	قَدْ	خَرَجُوْا	بِهٖ ؕ	وَاللّٰهُ
हालांकि तहक़ीक़	वो दाख़िल हुए थे	साथ कुफ़्र के	और वो	यक़ीनन	निकल गए	साथ उसी के	और अल्लाह

اَعْلَمُ	بِمَا	كَانُوْا	يَكْتُمُوْنَ ﴿61﴾	وَتَرٰى	كَثِيْرًا	مِّنْهُمْ
ज़्यादा जानता है	उसको जो	थे वो	छुपाते	और आप देखेंगे	कसीर तादाद को	उनमें से

يُسَارِعُوْنَ	فِى الْاِثْمِ	وَالْعُدْوَانِ	وَاَكْلِهِمُ	السُّحْتَ ؕ	لَبِئْسَ
वो दौड़ धूप करते हैं	गुनाह में	और ज़्यादती में	और अपने खाने में	हराम को	अलबत्ता कितना बुरा है

مَا	كَانُوْا	يَعْمَلُوْنَ ﴿62﴾	لَوْلَا	يَنْهٰهُمُ	الرَّبّٰنِيُّوْنَ	وَالْاَحْبَارُ
जो	थे वो	वो अमल करते	क्यों नहीं	रोकते उन्हें	रब्बानी/रब वाले	और उलमा

عَنْ قَوْلِهِمُ	الْاِثْمَ	وَاَكْلِهِمُ	السُّحْتَ ؕ	لَبِئْسَ	مَا	كَانُوْا
उनके क़ौल से	गुनाह के	और उनके खाने से	हराम को	अलबत्ता कितना बुरा है	जो	थे वो

يَصْنَعُوْنَ ﴿63﴾	وَقَالَتِ	الْيَهُوْدُ	يَدُ	اللّٰهِ	مَغْلُوْلَةٌ ؕ	غُلَّتْ	اَيْدِيْهِمْ
वो करते/बनाते	और कहा	यहूद ने	हाथ	अल्लाह का	बंधा हुआ है	बांध दिए गए	हाथ उनके

وقف لازم

وَلُعِنُوْا	بِمَا	قَالُوْا ۘ	بَلْ	يَدٰهُ	مَبْسُوْطَتٰنِ ۙ	يُنْفِقُ
और वो लानत किए गए	बवजह उसके जो	उन्होंने कहा	बल्कि	उसके दोनों हाथ	दोनों खुले हुए हैं	वो ख़र्च करता है

كَيْفَ	يَشَآءُ ؕ	وَلَيَزِيْدَنَّ	كَثِيْرًا	مِّنْهُمْ	مَّآ	اُنْزِلَ
जिस तरह	वो चाहता है	और अलबत्ता वो ज़रूर ज़्यादा कर देगा	कसीर तादाद को	उनमें से	जो कुछ	नाज़िल किया गया

اِلَيْكَ	مِنْ رَّبِّكَ	طُغْيَانًا	وَّكُفْرًا ؕ	وَاَلْقَيْنَا	بَيْنَهُمُ
तरफ़ आपके	आपके रब की तरफ़ से	सरकशी में	और कुफ़्र में	और डाल दी हमने	दर्मियान उनके

الْعَدَاوَةَ	وَالْبَغْضَآءَ	اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ؕ	كُلَّمَآ	اَوْقَدُوْا	نَارًا
अदावत	और बुग़्ज़	क़यामत के दिन तक	जब कभी	उन्होंने भड़काई	आग

لِّلْحَرْبِ	اَطْفَاَهَا	اللّٰهُ ۙ	وَيَسْعَوْنَ	فِى الْاَرْضِ	فَسَادًا ؕ	وَاللّٰهُ
जंग के लिए	बुझा दिया उसे	अल्लाह ने	और वो दौड़ धूप करते हैं	ज़मीन में	फ़साद की	और अल्लाह

لَا يُحِبُّ	الْمُفْسِدِيْنَ (64)	وَلَوْ	اَنَّ	اَهْلَ الْكِتٰبِ	اٰمَنُوْا	وَاتَّقَوْا
नहीं वो पसंद करता	फ़साद करने वालों को	और अगर	बेशक	अहले किताब	ईमान लाते	और तक़वा करते

لَكَفَّرْنَا	عَنْهُمْ	سَيِّاٰتِهِمْ	وَلَاَدْخَلْنٰهُمْ	جَنّٰتِ	النَّعِيْمِ (65)
अलबत्ता दूर कर देते हम	उनसे	बुराइयां उनकी	और अलबत्ता हम् दाख़िल करते उन्हें	बाग़ों में	नेअमतों वाले

وَلَوْ	اَنَّهُمْ	اَقَامُوا	التَّوْرٰىةَ	وَالْاِنْجِيْلَ	وَمَآ	اُنْزِلَ	اِلَيْهِمْ
और अगर	बेशक वो	वो क़ायम करते	तौरात को	और इंजील को	और जो	नाज़िल किया गया	तरफ़ उनके

مِّنْ رَّبِّهِمْ	لَاَكَلُوْا	مِنْ فَوْقِهِمْ	وَمِنْ تَحْتِ	اَرْجُلِهِمْ ؕ	مِنْهُمْ
उनके रब की तरफ़ से	अलबत्ता वो खाते	अपने ऊपर से	और नीचे से	अपने पांवों के	उनमें से

اُمَّةٌ	مُّقْتَصِدَةٌ ؕ	وَكَثِيْرٌ	مِّنْهُمْ	سَآءَ	مَا	يَعْمَلُوْنَ (66) ع
एक गिरोह	मयाना रू है	और बहुत से	उनमें से	बहुत बुरा है	जो	वो अमल करते हैं

ع 9 10 13

يٰٓاَيُّهَا	الرَّسُوْلُ	بَلِّغْ	مَآ	اُنْزِلَ	اِلَيْكَ	مِنْ رَّبِّكَ ؕ	وَاِنْ
ऐ	रसूल	पहुंचा दीजिए	जो	नाज़िल किया गया	तरफ़ आपके	आपके रब की तरफ़ से	और अगर

لَّمْ	تَفْعَلْ	فَمَا	بَلَّغْتَ	رِسَالَتَهٗ ؕ	وَاللّٰهُ	يَعْصِمُكَ
ना	आपने किया (ऐसा)	तो नहीं	पहुंचाया आपने	पैग़ाम उसका	और अल्लाह	वो बचाएगा आपको

مِنَ النَّاسِ ؕ	اِنَّ	اللّٰهَ	لَا يَهْدِى	الْقَوْمَ	الْكٰفِرِيْنَ (67)	قُلْ
लोगों से	बेशक	अल्लाह	नहीं हिदायत देता	उस क़ौम को	जो काफ़िर है	कह दीजिए

يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ	لَسْتُمْ	عَلٰى شَيْءٍ	حَتّٰى	تُقِيْمُوا	التَّوْرٰىةَ
ऐ अहले किताब	नहीं हो तुम	किसी चीज़ पर	यहां तक कि	तुम क़ायम करो	तौरात को

وَالْاِنْجِيْلَ	وَمَآ	اُنْزِلَ	اِلَيْكُمْ	مِّنْ رَّبِّكُمْ ؕ	وَلَيَزِيْدَنَّ
और इंजील को	और जो	नाज़िल किया गया	तरफ़ तुम्हारे	तुम्हारे रब की तरफ़ से	और अलबत्ता वो ज़रूर ज़्यादा कर देगा

كَثِيْرًا	مِّنْهُمْ	مَّآ	اُنْزِلَ	اِلَيْكَ	مِنْ رَّبِّكَ	طُغْيَانًا
कसीर तादाद को	उनमें से	जो कुछ	नाज़िल किया गया	तरफ़ आपके	आपके रब की तरफ़ से	सरकशी में

وَّكُفْرًا ۚ	فَلَا	تَاْسَ	عَلَى الْقَوْمِ	الْكٰفِرِيْنَ ﴿68﴾	اِنَّ	الَّذِيْنَ
और कुफ़्र में	पस ना	आप अफ़सोस कीजिए	इस क़ौम पर	जो काफ़िर है	बेशक	वो जो

اٰمَنُوْا	وَالَّذِيْنَ	هَادُوْا	وَالصّٰبِـُٔوْنَ	وَالنَّصٰرٰى	مَنْ	اٰمَنَ
ईमान लाए	और जो	यहूदी बन गए	और जो साबी हैं	और जो नसारा हैं	जो कोई	ईमान लाया

بِاللّٰهِ	وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ	وَعَمِلَ	صَالِحًا	فَلَا	خَوْفٌ	عَلَيْهِمْ
अल्लाह पर	और आख़िरी दिन पर	और उसने अमल किए	नेक	तो ना	कोई ख़ौफ़ होगा	उन पर

وَلَا	هُمْ	يَحْزَنُوْنَ ﴿69﴾	لَقَدْ	اَخَذْنَا	مِيْثَاقَ	بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ
और ना	वो	वो ग़मगीन होंगे	अलबत्ता तहक़ीक़	लिया हमने	पुख़्ता अहद	बनी इस्राईल से

وَاَرْسَلْنَآ	اِلَيْهِمْ	رُسُلًا ؕ	كُلَّمَا	جَآءَهُمْ	رَسُوْلٌۢ	بِمَا
और भेजे हमने	तरफ़ उनके	कई रसूल	जब कभी	आया उनके पास	कोई रसूल	साथ उसके जो

لَا تَهْوٰٓى	اَنْفُسُهُمْ ۙ	فَرِيْقًا	كَذَّبُوْا	وَفَرِيْقًا	يَّقْتُلُوْنَ ﴿70﴾ ق
नहीं चाहते थे	नफ़्स उनके	एक गिरोह को	उन्होंने झुठलाया	और एक गिरोह को	वो क़त्ल करते थे

وَحَسِبُوْٓا	اَلَّا	تَكُوْنَ	فِتْنَةٌ	فَعَمُوْا	وَصَمُّوْا	ثُمَّ	تَابَ
और उन्होंने समझा	कि ना	होगा	कोई फ़ितना	तो वो अंधे हो गए	और वो बहरे हो गए	फिर	मेहरबान हुआ

اللّٰهُ	عَلَيْهِمْ	ثُمَّ	عَمُوْا	وَصَمُّوْا	كَثِيْرٌ	مِّنْهُمْ ؕ	وَاللّٰهُ
अल्लाह	उन पर	फिर	वो अंधे हो गए	और बहरे हो गए	अक्सर	उनमें से	और अल्लाह

بَصِيْرٌۢ	بِمَا	يَعْمَلُوْنَ ﴿71﴾	لَقَدْ	كَفَرَ	الَّذِيْنَ	قَالُوْٓا	اِنَّ
ख़ूब देखने वाला है	उसको जो	वो अमल करते हैं	अलबत्ता तहक़ीक़	कुफ़्र किया	उन लोगों ने	जिन्होंने कहा	बेशक

اللّٰهَ	هُوَ	الْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ ؕ	وَقَالَ	الْمَسِيْحُ	يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ	
अल्लाह	वो ही	मसीह इबने मरियम है	और कहा था	मसीह ने	ऐ बनी इस्राईल	

اعْبُدُوا	اللّٰهَ	رَبِّيْ	وَرَبَّكُمْ ؕ	اِنَّهٗ	مَنْ	يُّشْرِكْ	بِاللّٰهِ
इबादत करो	अल्लाह की	जो रब है मेरा	और रब है तुम्हारा	बेशक वो	जो	शिर्क करे	साथ अल्लाह के

فَقَدْ	حَرَّمَ	اللّٰهُ	عَلَيْهِ	الْجَنَّةَ	وَمَاْوٰىهُ	النَّارُ ؕ	وَمَا
तो तहक़ीक़	हराम ठहरा दी	अल्लाह ने	उस पर	जन्नत	और ठिकाना उसका	आग है	और नहीं है

لِلظّٰلِمِيْنَ	مِنْ اَنْصَارٍ ﴿72﴾	لَقَدْ	كَفَرَ	الَّذِيْنَ	قَالُوْٓا	اِنَّ
ज़ालिमों के लिए	कोई मददगार	अलबत्ता तहक़ीक़	कुफ़्र किया	उन लोगों ने	जिन्होंने कहा	बेशक

اللّٰهَ	ثَالِثُ	ثَلٰثَةٍ ۘ	وَمَا	مِنْ اِلٰهٍ	اِلَّآ	اِلٰهٌ	وَّاحِدٌ ؕ
अल्लाह	तीसरा है	तीन का	और नहीं	कोई इलाह (बरहक़)	मगर	इलाह	एक ही

وقف لازم

وَاِنْ	لَّمْ	يَنْتَهُوْا	عَمَّا	يَقُوْلُوْنَ	لَيَمَسَّنَّ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا
और अगर	ना	वो बाज़ आए	उससे जो	वो कहते हैं	अलबत्ता ज़रूर पहुंचेगा	उनको जिन्होंने	कुफ़्र किया

مِنْهُمْ	عَذَابٌ	اَلِيْمٌ ﴿73﴾	اَفَلَا	يَتُوْبُوْنَ	اِلَى اللّٰهِ	وَيَسْتَغْفِرُوْنَهٗ ؕ
उनमें से	अज़ाब	दर्दनाक	क्या भला नहीं	वो तौबा करेंगे	तरफ़ अल्लाह के	और वो बख़्शिश मांगेंगे उससे

وَاللّٰهُ	غَفُوْرٌ	رَّحِيْمٌ ﴿74﴾	مَا	الْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ	اِلَّا
और अल्लाह	बहुत बख़्शने वाला है	निहायत रहम करने वाला है	नहीं	मसीह इबने मरियम	मगर

رَسُوْلٌ ۚ	قَدْ	خَلَتْ	مِنْ قَبْلِهِ	الرُّسُلُ ؕ	وَاُمُّهٗ	صِدِّيْقَةٌ ؕ
एक रसूल	तहक़ीक़	गुज़र चुके	इससे क़ब्ल	कई रसूल	और उसकी मां	बहुत सच्ची थी

كَانَا	يَاْكُلٰنِ	الطَّعَامَ ؕ	اُنْظُرْ	كَيْفَ	نُبَيِّنُ	لَهُمُ	الْاٰيٰتِ
थे वो	वो दोनों खाया करते	खाना	देखिए	किस तरह	हम वाज़ेह करते हैं	उनके लिए	आयात

ثُمَّ	انْظُرْ	اَنّٰى	يُؤْفَكُوْنَ ﴿75﴾	قُلْ	اَتَعْبُدُوْنَ	مِنْ دُوْنِ	اللّٰهِ
फिर	देखिए	कहां से	वो फेरे जाते हैं	कह दीजिए	क्या तुम इबादत करते हो	सिवाए	अल्लाह के

مَا	لَا يَمْلِكُ	لَكُمْ	ضَرًّا	وَّلَا	نَفْعًا ؕ	وَاللّٰهُ	هُوَ
उसकी जो	नहीं मिल्कियत रखता	तुम्हारे लिए	किसी नुक़्सान का	और ना	किसी नफ़ा का	और अल्लाह	वो ही है

السَّمِيْعُ	الْعَلِيْمُ ﴿76﴾	قُلْ	يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ	لَا تَغْلُوْا	فِيْ دِيْنِكُمْ
ख़ूब सुनने वाला	ख़ूब जानने वाला	कह दीजिए	ऐ अहले किताब	ना तुम ग़ुलुव करो	अपने दीन में

غَيْرَ	الْحَقِّ	وَلَا	تَتَّبِعُوْۤا	اَهْوَآءَ	قَوْمٍ	قَدْ	ضَلُّوْا	مِنْ قَبْلُ
बग़ैर	हक़ के	और ना	तुम पैरवी करो	ख़्वाहिशात की	एक क़ौम की	तहक़ीक़	वो गुमराह हो गए	इससे पहले

وَاَضَلُّوْا	كَثِيْرًا	وَّضَلُّوْا	عَنْ سَوَآءِ السَّبِيْلِ ﴿77﴾ ع	لُعِنَ	الَّذِيْنَ
और उन्होंने गुमराह किया	कसीर तादाद को	और वो भटक गए	सीधे रास्ते से	लानत किए गए	वो जिन्होंने

ع 10 11 14

كَفَرُوْا	مِنْۢ بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ	عَلٰى لِسَانِ	دَاوٗدَ	وَعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ ؕ	
कुफ़्र किया	बनी इस्राईल में से	ज़बान पर	दाऊद की	और ईसा इबने मरियम की	

ذٰلِكَ	بِمَا	عَصَوْا	وَّكَانُوْا	يَعْتَدُوْنَ ﴿78﴾	كَانُوْا
ये	बवजह इसके जो	उन्होंने नाफ़रमानी की	और थे वो	हद से बढ़ जाते	थे वो

لَا يَتَنَاهَوْنَ	عَنْ مُّنْكَرٍ	فَعَلُوْهُ ؕ	لَبِئْسَ	مَا	كَانُوْا	يَفْعَلُوْنَ ﴿79﴾
ना वो रोकते एक-दूसरे को	किसी बुराई से	वो करते थे जिसे	अलबत्ता कितना बुरा है	जो	थे वो	वो करते

لَبِئْسَ	كَفَرُوْا ؕ	الَّذِيْنَ	يَتَوَلَّوْنَ	مِّنْهُمْ	كَثِيْرًا	تَرٰى
अलबत्ता कितना बुरा है	कुफ़्र किया	उनसे जिन्होंने	वो दोस्ती करते हैं	उनमें से	कसीर तादाद को	आप देखेंगे

عَلَيْهِمْ	اللّٰهُ	سَخِطَ	اَنْ	اَنْفُسُهُمْ	لَهُمْ	قَدَّمَتْ	مَا
उन पर	अल्लाह	नाराज़ हुआ	ये कि	उनके नफ़्सों ने	उनके लिए	आगे भेजा	जो

بِاللّٰهِ	يُؤْمِنُوْنَ	كَانُوْا	وَلَوْ	خٰلِدُوْنَ (80)	هُمْ	وَفِي الْعَذَابِ
अल्लाह पर	वो ईमान लाते	होते वो	और अगर	हमेशा रहने वाले हैं	वो	और अज़ाब में

اَوْلِيَآءَ	اتَّخَذُوْهُمْ	مَا	اِلَيْهِ	اُنْزِلَ	وَمَآ	وَالنَّبِيِّ
दोस्त	वो बनाते उन्हें	ना	तरफ़ उनके	नाज़िल किया गया	और जो कुछ	और नबी पर

اَشَدَّ	لَتَجِدَنَّ	فٰسِقُوْنَ (81)	مِّنْهُمْ	كَثِيْرًا	وَلٰكِنَّ
सबसे ज़्यादा सख़्त	अलबत्ता आप ज़रूर पाऐंगे	नाफ़रमान हैं	उनमें से	बहुत से	और लेकिन

وَالَّذِيْنَ	الْيَهُوْدَ	اٰمَنُوا	لِّلَّذِيْنَ	عَدَاوَةً	النَّاسِ
और उनको जिन्होंने	यहूद को	ईमान लाए	उन लोगों के लिए जो	अदावत/दुश्मनी में	लोगों में से

اٰمَنُوا	لِّلَّذِيْنَ	مَّوَدَّةً	اَقْرَبَهُمْ	وَلَتَجِدَنَّ	اَشْرَكُوْا ج
ईमान लाए	उनके लिए जो	मोहब्बत में	सबसे क़रीब उनमें	और अलबत्ता आप ज़रूर पाऐंगे	शिर्क किया

مِنْهُمْ	بِاَنَّ	ذٰلِكَ	نَصٰرٰى ؕ	اِنَّا	قَالُوْٓا	الَّذِيْنَ
उनमें	बवजह इसके कि	ये	नसारा हैं	बेशक हम	कहा	उनको जिन्होंने

لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ (82)	وَاَنَّهُمْ	وَرُهْبَانًا	قِسِّيْسِيْنَ
नहीं तकब्बुर करते	और बेशक वो	और राहिब हैं	उलमा हैं